भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 6 **फरवरी** 2005 **अंक** 2

प्रेमचंद और प्रसाद

मुंशी प्रेमचंद और जयशंकरप्रसाद एक-दूसरे को जानते तो थे पर आमने-सामने औपचारिक भेंट नहीं हुई थी। एक बार ऐसा हुआ कि दोनों एक ही डॉक्टर के दवाखाने में बैठे थे। डॉक्टर साहब ने मुंशी प्रेमचंद से पूछा, ''क्या आप इन महाशय को पहचानते हैं ?''

मुंशी प्रेमचंद ने एक शेर सुनाया—

''काबा में, कलीसा में, बुतखाने में या दिल में
है होश मुझे इतना कि तुझको कहीं देखा है।''

जयशंकर प्रसादजी ने तुरन्त उत्तर दिया—

''इस कक्ष में प्रवेश करने के साथ ही
परिचित से जाने कब के
तुम लगे उसी क्षण हमको।''

डॉक्टर साहब ने एक-दूसरे का परिचय कराया तो दोनों महान विभूतियाँ एक-दूसरे के गले लग गईं।

'वह काशी का गुंडा था'

जयशंकर प्रसाद

मुंशी प्रेमचंद 'हंस' निकाल रहे थे। एक विशेषांक निकलना था उसमें जयशंकर प्रसाद की भी एक कहानी छापनी थी, लेकिन व्यस्तता के कारण वायदा करके भी जयशंकर प्रसाद अपनी कहानी मुंशी प्रेमचंद को नहीं दे पाये।

एक दिन स्वयं प्रेमचंदजी यह तय करके प्रसादजी के घर गये कि आज 'हाँ' या 'नाँ' का फैसला करके ही लौटेंगे। उन्होंने जयशंकर प्रसादजी के घर पहुँचकर देखा कि प्रसादजी नंगे बदन हैं और तेल मालिश करवा रहे हैं। उनकी यह छवि देखकर, मुंशी प्रेमचंद ने तनिक मुसकुराकर कहा, ''इस वक्त तो आप सचमुच बनारसी गुंडे लग रहे हैं, ऐसे में मैं आपसे रचना क्या माँगूँ ?''

और मुंशी प्रेमचंद खाली हाथ वापस चले गये। जयशंकर प्रसादजी को अपने प्रमाद पर खेद हुआ। उन्होंने उसी शाम एक श्रेष्ठ कहानी लिखी और जाकर मुंशी प्रेमचंदजी को दी।

कहानी का शीर्षक था—'गुंडा', जो प्रसादजी की श्रेष्ठ कहानियों में से एक मानी जाती है।

कहानी का अन्तिम वाक्य है—'वह काशी का गुण्डा था।'

— गोपालदास नागर

स्वतंत्र भारत में मैकाले का पुनर्जन्म

1834 में गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी के प्रथम विधि सदस्य के रूप में लॉर्ड टी०वी० मैकाले भारत आया। उसे जनशिक्षा समिति का अध्यक्ष भी बनाया गया। चार्टर एक्ट 1813 की धारा 43 के निहितार्थ के सम्बन्ध में परामर्श माँगा गया। मैकाले ने 2 फरवरी 1835 को पाश्चात्य शिक्षा के पक्ष में अपना निर्णय दिया। उसने अंग्रेजी माध्यम से पाश्चात्य ज्ञान व विज्ञान की शिक्षा की अनुशंसा की। उसका कहना था—''एक अच्छे यूरोपीय पुस्तकालय की एक आलमारी का साहित्य भारत व अरब के सम्पूर्ण साहित्य के समान महत्त्व रखता है।''

अंग्रेजी भाषा **हमारी भारतीय प्रजा** के लिए सर्वाधिक उपयोगी है।

यह निर्णय तत्कालीन ब्रिटिश सत्ताधारी का था। जिसका विचार—''अपने सीमित साधनों से हमारे लिए यह **असम्भव है कि जनसामान्य को शिक्षा देने का प्रयास करें।** वर्तमान में हमें अपने प्रयास एक ऐसे वर्ग को बनाने में करना चाहिए जो हमारे द्वारा शासित लाखों लोगों के बीच दुभाषियों का काम कर सकें तथा जो **रंग रूप में भारतीय हों परन्तु रुचि, विचार, आदर्श तथा बुद्धि में अंग्रेज हों।''**

भारतीय गणतंत्र के 56वें वर्ष में केन्द्र सरकार एक स्वयंसेवी संस्था की सहायता से सात राज्यों में गरीबी रेखा से नीचे जीवन-यापन करनेवाले 18 से 35 साल की आयु के लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए उन्हें **अंग्रेजी बोलना, और टाई बाँधना सिखायेगी** साथ ही उन्हें **बातचीत और जीने का सलीका भी सिखायेगी।** यह परियोजना फिलहाल सात राज्यों के नौजवानों के लिए बनाई गई है। इसमें उत्तर प्रदेश के भी पाँच हजार भाग्यशाली युवक होंगे।

मैकाले ने दुभाषिये का काम करने के लिए अंग्रेजी सिखाने की बात कही थी और रंग-रूप में भारतीय हों यह इच्छा व्यक्त की थी, किन्तु केन्द्र सरकार उन्हें पूर्णतया अंग्रेजी वेश-परिवेश में ढालना चाहती है—टाई बाँधना सिखाकर। क्या इस रूप में ढले लोग अपने परिवार और समाज में सन्तुलन बनाये रख सकेंगे? भाषा और संस्कृति से संस्कार जन्म लेते हैं, क्या वर्णसंकर समाज और संस्कृति का सृजन किया जायगा? क्या रोजगार उपलब्ध करने का यही तरीका है? लगता है, यह केन्द्र की वर्णसंकरी सरकार की सोच है जो अनेक विरोधाभासों के बीच घिसट रही है तथा देश की भाषा, संस्कृति और सभ्यता का नाश करनेवाले ब्रिटिशराज के मैकाले का पुनर्जन्म करा रही है। क्यों न हो जब कृषि के क्षेत्र में विदेशी आयातित बीज से फसलें सुधारी जा रही हैं, अब अंग्रेजी के माध्यम से नस्लें सुधारी जायँगी। यह केन्द्र सरकार का गरीबों से इब्दताए इश्क है, आगे-आगे देखिए होता है क्या?

— पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्मान-पुरस्कार

14 विद्वानों को हिन्दी सेवी सम्मान

राष्ट्रपति भवन में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा द्वारा 19 जनवरी 2005 को आयोजित समारोह में 14 देशी-विदेशी हिन्दी विद्वानों को राष्ट्रपति ए०पी०जे० अब्दुल कलाम ने पुरस्कृत किया। हिन्दी सेवी सम्मान 2002 के अन्तर्गत अलग-अलग पुरस्कार दिए गए जिसके तहत एक-एक लाख की नकद राशि, प्रशस्ति-पत्र और शॉल भेंट किये गये। पुरस्कृत विद्वानों में काज वेंकटेश्वर राव, मुरलीधर मारुति जगताप, सत्यपाल पटाईत, एन० चन्द्रशेखर नायर, श्यामसुन्दर शर्मा, मनु शर्मा, धर्मपाल मैनी, डॉ० रामदरश मिश्र, डॉ० एस० तंकमणि अम्मा, प्रो० हरिशंकर आदेश और डॉ० मारिया नेज्यैशी हैं। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की निदेशक बेला बनर्जी ने इस दौरान हिन्दी के प्रचार-प्रसार में संस्थान की उपलब्धियों का विस्तृत परिचय दिया।

गणेशशंकर विद्यार्थी पुरस्कार

भारत के राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने पत्रकारिता व खेल में गहन रुचि रखने वाले स्वतंत्रता संग्राम सेनानी काशी के **स्व० ईश्वरचन्द्र सिन्हा** को पिछले दिनों केन्द्रीय हिन्दी संस्थान ने सन् 2002 के गणेशशंकर विद्यार्थी पुरस्कार से सम्मानित किया था। स्वर्गीय सिन्हा की धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रावती देवी ने यह पुरस्कार दिल्ली जाकर ग्रहण किया। इसके तहत उन्हें एक लाख रुपये का ड्राफ्ट एवं प्रशस्ति ताम्रपत्र प्रदान किया गया है।

डॉ० भवानीलाल भारतीय सम्मानित

आर्यसमाज के लब्धप्रतिष्ठ लेखक तथा स्वामी दयानन्द के जीवन एवं व्यक्तित्व के अधिकारी विद्वान् **डॉ० भवानीलाल भारतीय** को आर्यसमाज भुवनेश्वर (उड़ीसा) द्वारा उनकी विगत पचास वर्षों की साहित्य सेवा तथा वेद, संस्कृति, साहित्य एवं भारतीय नवजागरण विषयक दर्जनों ग्रन्थों के लेखन के उपलक्ष्य में 11, 12 फरवरी को महर्षि दयानन्द साहित्य सम्मान से सम्मानित करने का निश्चय किया है। स्मर्तव्य है कि उक्त विषयों पर डॉ० भारतीय के शताधिक ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं तथा भारतीय धर्म एवं संस्कृति पर उन्होंने नीदरलैण्ड, बेल्जियम, नेपाल आदि देशों में विस्तृत भ्रमण कर अनेक व्याख्यान दिये हैं।

इससे पूर्व उनके पचहत्तर वर्ष पूरे करने पर आर्यसमाज श्री गंगानगर राजस्थान ने आर्य लेखक सम्मेलन का आयोजन किया जिसमें वैदिक और सांस्कृतिक आलेखन के विभिन्न आयामों पर आगन्तुक लेखकों ने व्यापक चर्चा की। इस अवसर पर उन्हें रोहतक निवास श्री चौधरी मित्रसेन ने अपने पिता की स्मृति में चौधरी शीशराम स्मारक साहित्य पुरस्कार अर्पित किया। इसके अन्तर्गत इक्यावन हजार की राशि तथा अमृत महोत्सव समिति की ओर से अभिनन्दन पत्र, उत्तरीय एवं श्रीफल आदि भेंट किये गये।

साहित्यकार एवं कृति सम्मान समारोह

नेमिचन्द्र जैन को शलाका सम्मान

हिन्दी अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा वर्ष 2004-2005 साहित्यकार एवं कृति सम्मान समारोह 5 फरवरी 2005 को फिक्की सभागार, नयी दिल्ली में अकादमी की अध्यक्ष मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित के मुख्य अतिथित्व में आयोजित हुआ। गत वर्ष शलाका सम्मान से सम्मानित राजेन्द्र यादव ने सम्मान अर्पणकिया।

हिन्दी अकादमी, दिल्ली के उपाध्यक्ष डॉ० मुकुन्द द्विवेदी के निर्देशन में वर्ष 2004-05 का **शलाका सम्मान** 86 वर्षीय **पद्मश्री नेमिचन्द जैन** को प्रदान किया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें 1,11,111 रुपये नकद, शाल प्रशस्ति-पत्र तथा प्रतीक चिह्न भेंट किया गया।

साहित्यकार सम्मान के अन्तर्गत प्रो० मुज़ीब रिज़वी, डॉ० मस्तराम कपूर, प्रो० सूरजभान सिंह, डॉ० हरिकृष्ण देवसरे, श्रीमती कुसुम अंसल, श्री रामशरण शर्मा 'मुंशी', श्री अमरनाथ 'अमर', डॉ० सत्यमित्र दुबे, आचार्य गुरुप्रसाद, श्री मनोज मिश्र तथा श्री बल्लभ डोभाल सम्मानित किये गये। प्रत्येक साहित्यकार एवं हिन्दीसेवी को 21,000 रुपये नकद, शाल, प्रशस्ति-पत्र तथा प्रतीक चिह्न प्रदान किये गये।

काका हाथरसी-सम्मान हास्य-व्यंग्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए श्री अरुण जैमिनी को दिया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें 21,000 रुपये नकद, शाल, प्रशस्ति-पत्र तथा प्रतीक चिह्न प्रदान किये गये।

अकादमी के वर्ष 2003-04 के एक विशिष्ट कृति, ग्यारह साहित्यिक कृति तथा आठ बाल एवं किशोर साहित्य कृति सम्मान भी प्रदान किये गये।

साहित्य सेतु सम्मान

बानी प्रिया फाउण्डेशन, कोलकाता के तत्त्वावधान में 15 जनवरी 2005 को पराड़कर भवन, वाराणसी में आयोजित समारोह में बंगला कवि नवारुण भट्टाचार्य ने प्रख्यात विद्वान् व हिन्दी अनुवादक **प्रो० वरयाम सिंह** को मुनमुन सरकार स्मृति साहित्य सेतु सम्मान से सम्मानित किया।

सम्मानस्वरूप अंगवस्त्रम्, प्रशस्ति-पत्र तथा ग्यारह हजार रुपये की राशि प्रदान की गयी। समारोह में डॉ० केदारनाथ सिंह, काशीनाथ सिंह, चन्द्रबली सिंह, बच्चन सिंह, दीपक मलिक, सदानंद शाही, चितरंजन सिंह, हरीशचन्द्र शर्मा, महासचिव अरविन्द चतुर्वेदी, संयोजक कुमकुम कर, सचिव व्योमेश शुक्ल तथा अनेक साहित्यकार उपस्थित थे।

डॉ० राजकुमारी पाठक पुरस्कृत

'मुक्तिबोध के काव्य में मनोविज्ञान' डी०लिट्० के शोधग्रन्थ के लिए **डॉ० राजकुमारी पाठक** को श्री अमर सिंह आत्रेय हिन्दी विकास संस्थान मेरठ द्वारा 5 जनवरी 2005 को दशम् कृतिकार सम्मान पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कारस्वरूप ग्यारह हजार रुपये की राशि प्रदान की गयी। समारोह की अध्यक्षता जे०एन०यू० के भारतीय भाषा विभाग के चेयरमैन डॉ० नसीर अहमद खान ने की। मुख्य अतिथि हिन्दी निदेशालय के पूर्व निदेशक डॉ० गंगाप्रसाद विमल थे।

साहित्य व शिक्षा के लिए पद्म पुरस्कार से सम्मानित

56वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर देश के सुप्रसिद्ध लेखकों, शिक्षाविदों तथा साहित्यकारों को पद्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया—

पद्मश्री : अमीन कामिल, जम्मू कश्मीर; प्रो० आदित्यकुमार बागची, पश्चिम बंगाल; विहंगम, बिहार; प्रो० दरछवाना, मिजोरम; गादुल सिंह लामुल, सिक्किम; जगतार सिंह ग्रेवाल, पंजाब; मेहरुन्निसा परवेज, मध्यप्रदेश; डॉ० शांताराम बलवंत मजूमदार, महाराष्ट्र।

पद्मभूषण : डॉ० आंद्रे बेटिले, दिल्ली; बलराजपुरी, जम्मूकश्मीर; प्रो० इरफान हबीब, उत्तर प्रदेश; कुर्तुलेन हैदर, उत्तर प्रदेश; रोमिला थापर, दिल्ली; डॉ० सरदार अंजुम, हरियाणा।

इस वर्ष कुल 9 व्यक्तियों को पद्म विभूषण, 30 को पद्मभूषण और 57 को पद्मश्री से अलंकृत किया गया।

विष्णु प्रभाकर और पद्मश्री सम्मान

हिन्दी के गाँधीवादी यशस्वी कथाकार 93 वर्षीय विष्णु प्रभाकर को गणतंत्र दिवस संबंधी कार्यक्रम में राष्ट्रपति भवन में आमंत्रित किया गया था। आमंत्रण श्री एवं श्रीमती के रूप में था। विष्णुजी की पत्नी का निधन अनेक वर्षों पूर्व हो गया। वयोवृद्ध विष्णुजी अपने पुत्र के साथ राष्ट्रपति भवन गये। सुरक्षा अधिकारियों ने उनको बेटे के साथ नहीं जाने दिया, जबकि विष्णुजी ने अपने बेटे को पत्नी की जगह ले जाने की अनुमति माँगी थी।

'आवारा मसीहा' के लेखक विष्णु प्रभाकर द्वारा इस अपमान के कारण पद्मभूषण सम्मान लौटाने का समाचार पढ़कर राष्ट्रपति ए०पी०जे० कलाम ने रविवार, 30 जनवरी 2005 को विष्णुजी से मिलने की इच्छा व्यक्त की। विष्णुजी ने कहा कि वे चाहते हैं राष्ट्रपति भवन हिन्दी और हिन्दी के साहित्यकारों का सम्मान करे।

श्री विष्णु प्रभाकर 30 जनवरी को राष्ट्रपति डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम से अपने पुत्र के साथ मिलने गये तो उनका विचार एकदम बदल गया। उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि तमिलभाषी डॉ० कलाम ने उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'आवारा मसीहा' की तारीफ की बल्कि एक सुधी पाठक और हिन्दीप्रेमी की तरह उस पर चर्चा भी की। राष्ट्रपति ने गाड़ी भेजकर उन्हें बुलाया था। राष्ट्रपति ने उनसे आधे घण्टे तक बात की, बाद में उन्होंने कहा—''राष्ट्रपति कह रहे हैं तो मैं अपना निर्णय वापस ले लूँगा, क्योंकि उनसे बात करके

मुझे लगा कि हिन्दी के प्रति उनके मन में कोई दुर्भावना नहीं है। राष्ट्रपति उनकी भावना का सम्मान करते हैं और यह विश्वास दिलाते हैं कि आगे से इस तरह की घटना नहीं होगी और मैं सीधे उनसे सम्पर्क कर सकता हूँ।''

विष्णुजी ने बताया कि डॉ० कलाम को उनके लिखे पत्र नहीं मिले हैं। उन्होंने राष्ट्रपति को अपने लिखे पत्रों की प्रतिलिपि सौंपी। डॉ० कलाम ने कहा वे इसकी जाँच करायेंगे।

विष्णुजी ने कहा ''राष्ट्रपति भवन मेरे घर का दूसरा आँगन रहा है। राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद के समय हम यहाँ आते रहे हैं और यहाँ की लाइब्रेरी हमारी बनायी हुई है। इसलिए जब 26 जनवरी को मुझे प्रवेश से रोका गया तो मुझे बहुत ठेस लगी और ऐसा लगा कि मुझे मेरे अपने ही आँगन में आने से रोका जा रहा है।''

रोमिला थापर का सम्मान लेने से इनकार

सुप्रसिद्ध वामपंथी इतिहासकार डॉ० रोमिला थापर ने पद्मभूषण और आसाम के पत्रकार कनकसेन ढेका ने पद्मश्री पुरस्कार लेने से इनकार कर दिया है। डॉ० थापर का कहना है कि उन्होंने सरकारी सम्मान न लेने का निश्चय किया है, यह उनका निजी मामला है। वे जे०एन०यू० में प्राध्यापक पद से सेवानिवृत्त हैं। 1992 में वे पद्मश्री भी लौटा चुकी हैं।

स्त्री शक्ति सम्मान

वर्ष 2004 का पी०एस० चक्रवर्ती स्त्री शक्ति साइंस सम्मान विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए **डॉ० अनीता मेहता** और **डॉ० सोनिया नित्यानंद** को संयुक्त रूप से दिया गया। इण्डिया इण्टरनेशनल सेंटर में आयोजित यह पुरस्कार डॉ० शुचारु चक्रवर्ती और श्रीमती प्रतिमा चक्रवर्ती ट्रस्ट, यू०के० द्वारा प्रायोजित किया गया। इस अवसर पर सुपरिचित लेखिका चित्रा मुद्गल ने कहा कि स्त्री संघर्ष का एक लम्बा सफर रहा है जिसके कारण उसने अनेक आयाम प्राप्त किये हैं।

नरेश मेहता स्मृति वाङ्मय सम्मान

सुप्रसिद्ध पर्यावरणविद् एवं लेखक **श्री अनुपम मिश्र** (पुत्र : स्व० भवानीप्रसाद मिश्र) को चौथा श्री नरेश मेहता स्मृति वाङ्मय सम्मान 2004, 26 दिसम्बर 2004 को भोपाल में प्रदान किया गया। **श्री मुरलीमनोहर जोशी** ने शंख ध्वनि और मंत्रोच्चार के बीच प्रशस्ति पत्र, शाल, श्रीफल और 21 हजार रुपये प्रदान किये।

'शिक्षा, समाज और संस्कृति' विषय पर डॉ० जोशी ने अपने प्रभावी भाषण में कहा कि विज्ञान और तकनीकी का संजाल जिस भयानक बाजारवाद की शक्ल में अपने हाथ-पैर पसार रहा है, वह समाज, शिक्षा, साहित्य और संस्कृति सबके लिए गम्भीर खतरे पैदा करते हुए हमारे नैतिक मूल्यों पर आघात कर रहा है। ऐसी सूरत में हमारा जनतंत्र बाजारवाद के सामने नहीं टिक पाएगा। यदि हम पूरी तरह बाजारवाद की गिरफ्त में आ गये, तो सर्वत्र धन का वर्चस्व कायम हो जाएगा और हमारे जीवन मूल्य तो समाप्त ही हो जायेंगे।

कवि कुरुप सम्मानित

मलयालम भाषा के प्रसिद्ध कवि **ओएन वी कुरुप** को वर्ष 2004 अरंग अबू धावी साहित्य पुरस्कार प्रदान किया जायगा। पुरस्कार समिति के अध्यक्ष जार्ज ओनाक्कूर ने बताया कि श्री कुरुप को उनके कविता संग्रह 'कहानीकम पाक्श' के लिए फरवरी के दूसरे सप्ताह में दिया जायेगा।

पांडा को 'साहित्य भारती'

आधुनिक उड़िया कविता में उल्लेखनीय योगदान के लिए सुप्रसिद्ध उड़िया कवि **राजेन्द्र किशोर पांडा** को वर्ष 2004 का प्रतिष्ठित साहित्य भारती सम्मान दिया जायेगा।

देवीशंकर अवस्थी सम्मान

जाने-माने कवि एवं आलोचक **अरविन्द त्रिपाठी** को उनकी आलोचना पुस्तक 'कवियों की पृथ्वी' के लिये नौवाँ देवीशंकर अवस्थी स्मृति सम्मान दिया जायेगा। सम्मान न्यास की ओर से जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार सुश्री कृष्णा सोबती, डॉ० शिवकुमार मिश्र, डॉ० विश्वनाथ त्रिपाठी तथा मंगलेश डबराल की सदस्यता वाली निर्णायक समिति ने लेखों के इस संग्रह को हिन्दी कविता की पड़ताल पर केन्द्रित उल्लेखनीय आलोचना कृति बताते हुए सर्वसम्मति से उक्त फैसला किया।

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के 2002-2003 के सम्मान-पुरस्कार

विश्वभारती सम्मान 1.51 लाख

2002 प्रो० कैलाशपति त्रिपाठी, वाराणसी
2003 आचार्य रामनारायण त्रिपाठी, दिल्ली

महर्षि वाल्मीकि पुरस्कार एक लाख

2002 डॉ० जगन्नाथ पाठक, इलाहाबाद
2003 प्रो० रेवाप्रसाद द्विवेदी, वाराणसी

विशिष्ट पुरस्कार 51,000

2002

डॉ० मो० इसरायल खाँ, गाजियाबाद; डॉ० परमहंस मिश्र, वाराणसी; डॉ० जयशंकर त्रिपाठी, इलाहाबाद; डॉ० रामचरन शुक्ल, वाराणसी; डॉ० मनोरमा तिवारी, लखनऊ।

2003

डॉ० बलभद्र गोस्वामी, बरेली; डॉ० वशिष्ठ त्रिपाठी, वाराणसी; डॉ० अमरनाथ पाण्डेय, वाराणसी; डॉ० वासुदेवकृष्ण चतुर्वेदी, मथुरा; प्रो० आद्याप्रसाद मिश्र, गोरखपुर।

इसके अतिरिक्त 25,000 के वर्ष 2002 तथा वर्ष 2003 के कालिदास, बाणभट्ट, शंकर सायण पुरस्कार तथा व्यास पुरस्कार दस कृतियों पर घोषित हुए। वर्ष 2002 तथा वर्ष 2003 के दस-दस वेद पण्डित पुरस्कार भी वेद की विभिन्न शाखाओं के विद्वानों को दिये जायेंगे। इनके अतिरिक्त 11 हजार रुपये के विशेष पुरस्कार छह विद्वानों को तथा पाँच हजार के विविध पुरस्कार 20 आचार्यों को दिये गये।

जुगल किशोर जैथलिया को राजश्री गौरव सम्मान

कलकत्ता महानगर के कर्मठ समाजसेवी एवं साहित्यानुरागी **जुगलकिशोरजी जैथलिया** को 9 जनवरी 2005 को पश्चिम बंग-बंगला अकादमी में राजश्री स्मृति न्यास संस्था, कोलकाता द्वारा राजश्री गौरव सम्मान से विभूषित किया गया।

समारोह के प्रमुख वक्ता उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल, आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री ने कहा—समाज एवं साहित्य सेवा के लिए जुगलकिशोरजी जैसे कर्मठ एवं अनुरागी व्यक्तित्व की आवश्यकता है। जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो० कल्याणमल लोढ़ा ने अध्यक्षीय भाषण में श्री जैथलिया जैसे महनीय व्यक्ति की निष्ठा, निस्पृहता, औदार्य एवं राष्ट्रभक्ति की प्रशंसा की।

स्मृति शेष

डॉ० मोहनलाल तिवारी

वाराणसी के संघर्षशील प्रतिभाशाली साहित्यकार, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग के पूर्व प्रोफेसर **डॉ० मोहनलाल तिवारी** का सोमवार 17 जनवरी 2005 को निधन हो गया। एक दिन पूर्व दिल्ली से एम्स से चिकित्सा कराकर लौटे थे। वे दिल्ली नाक में आपरेशन कराने गये थे, वहाँ ज्ञात हुआ कि उन्हें ब्लड कैंसर है। 20 जून 1930 को जन्मे डॉ० तिवारी वाराणसी के साहित्य जगत में अत्यन्त लोकप्रिय थे। कितने छात्र-छात्राओं को उन्होंने शोध कराया। हिन्दी ही नहीं वे उर्दू तथा फारसी के भी जानकार थे। वाराणसी की अनेक साहित्यिक संस्थाओं को उनका योगदान स्मरणीय है। किसी भी साहित्यिक गोष्ठी में उनका अभाव खटकता रहेगा। वे स्वतंत्र विचारक थे, उनमें का साहित्यकार समय की चुनौती को स्वीकार करते हुए पत्रकार के रूप में पत्र-पत्रिकाओं और गोष्ठियों में स्पष्ट वक्ता के रूप में प्रगट होता था। काशी की साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थाओं नागरी प्रचारिणी सभा, रामचन्द्र शुक्ल शोध संस्थान, अभिमन्यु पुस्तकालय, ठलुआ क्लब सभी को उनका योगदान था। वे व्यक्ति नहीं संस्था थे।

आशुतोष भगवान शंकर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें, और उनके परिवार जिसमें उनकी विधवा पत्नी, तीन पुत्र तथा पुत्रियाँ हैं को शोक वहन करने की क्षमता प्रदान करें।

शिवकुमार सहाय

अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के पूर्व अध्यक्ष **शिवकुमार सहाय** का 18 जनवरी 2005 को भोपाल में निधन हो गया। संघ के सदस्यों ने उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा— श्री सहाय प्रकाशन उद्योग के उत्थान तथा एकजुटता के लिए प्रयत्नशील थे। वे प्रकाशकों के एक प्रतिनिधि मण्डल के साथ भोपाल जा रहे थे तभी रेल में ही उनका निधन हो गया। प्रकाशक संघ के सदस्य उनके निधन से मर्माहत हैं और प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

यत्र-तत्र-सर्वत्र

मानवाधिकार आयोग का हिन्दी शब्दकोश

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने मानवाधिकार संस्थाओं, कार्यकर्ताओं और आम आदमी के उपयोग के लिए मानवाधिकार शब्दावली का प्रकाशन किया है जिसमें 10 हजार से अधिक अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी समानार्थक शब्द है। शब्दावली निर्माण समिति ने करीब डेढ़ वर्ष के अनुसंधान और अनुवाद कार्य से यह शब्दकोश तैयार किया है। आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति डॉ० ए०एस० आनन्द के अनुसार मानवाधिकार के क्षेत्र में पारिभाषिक शब्द अंग्रेजी में है, जिससे बहुसंख्यक हिन्दी भाषाभाषी कामकाज में कठिनाई महसूस करते हैं। शब्द ज्ञान बहुत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि निश्चित शब्दावली के आधार पर ही कार्रवाई आगे बढ़ती है। मानवाधिकार से सम्बन्धित लैटिन और अंग्रेजी शब्दों के आधिकारिक हिन्दी समानार्थक शब्द उपलब्ध होने से लोगों को बहुत सुविधा होगी तथा आयोग के कामकाज में भी तेजी आएगी। हर शास्त्र या विषय की अपनी शब्दावली होती है। अनके शब्द और शब्दांश ऐसे होते हैं जिनके अर्थ विभिन्न विषयों के सन्दर्भ में भिन्न-भिन्न होते हैं। साथ ही अनेक शब्द या वाक्यांश ऐसे होते हैं जिनका प्रयोग किसी शास्त्र या विषय विशेष में होता है।

समाज सुधार में सदैव अग्रणी बंगाल

मनीषिका, कोलकाता के कार्यकर्ताओं का अखिल भारतीय कार्यकर्ता चेतना शिविर का आयोजन 1 तथा 2 जनवरी 2005 को हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्री गौरीशंकर कायां ने की, उद्घाटनकर्ता थे आचार्य श्री विष्णुकान्त शास्त्री, प्रधान अतिथि थे प्रो० कल्याणमल लोढ़ा।

भारत के चारित्रिक उत्थान में बंगाल का भी अभूतपूर्व योगदान रहा है। राजा राममोहन राय, चैतन्य महाप्रभु, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विशुद्धानन्द, विनोबा भावे जैसे श्रेष्ठ मनीषियों ने सम्पूर्ण विश्व को दिशा प्रदान की है। यह सभी बंगाल में जन्में हैं। यह उद्गार हिन्दी प्रसार-उत्थान समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिवकुमार वाजपेयी ने व्यक्त किए।

'मनीषिका' के 1 जनवरी 2005 को आयोजित दो दिवसीय चेतना शिविर में कानपुर से पधारे श्री वाजपेयी ने कहा कि मनीषियों ने देश को पूर्व में भी दिशा दी है। उसी श्रृंखला में आज डॉ० पुष्करलाल केडिया ने 'मनीषिका' संस्था के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना जगाने का कार्य किया है। बच्चों एवं युवाओं में संस्कारजन्य चेतना प्रदान करके यह संस्था विज्ञान एवं धर्म के द्वारा एक अलौकिक सृष्टि का निर्माण कर रही है। यह हम सबके लिए गौरव की बात है। 'जयतु हिन्दू विश्व' मासिक पत्रिका के सम्पादक विजयप्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि सामाजिक चेतना को जागृत करने का गौरवपूर्ण कार्य आज 'मनीषिका' संस्था कर रही है। कार्यकर्त्ता बन्धुओं को शिविर का अनुभव प्राप्त करके अपने-अपने क्षेत्र में प्रचार-प्रसार करना चाहिए। अन्तिम सत्र में सभी भाग लेनेवाले कार्यकर्त्ताओं ने हाथों में मोमबत्ती जलाकर नई पीढ़ी में चेतना जागृत करने का संकल्प लिया। इस शिविर में सम्पूर्ण भारत से प्रतिभागी आये जिसमें काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया।

देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा 'न्यूक्लियस' शोधपत्रिका का विमोचन

'न्यूक्लियस' शोध-पत्रिका के सातवें अंक का विमोचन करते हुए देवर्षि कलानाथ शास्त्री (मध्य में)। उनके दोनों ओर खड़े हैं 'न्यूक्लियस' के सम्पादक डॉ० कृष्णगोपाल शर्मा (बाएँ) तथा डॉ० ललित के० मेहता (दाएँ)

न्यूक्लियस सोसाइटी ऑफ टीचर्स, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा प्रकाशित शोध-पत्रिका 'न्यूक्लियस—एन इंटरडिसिप्लनरी जर्नल ऑफ दि ह्यूमेनिटिज एण्ड सोशल साइंसेज' के सातवें अंक (वर्ष 4, भाग 1) का विमोचन संस्कृत के प्रख्यात लेखक एवं इस वर्ष के साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता देवर्षि पं० कलानाथ शास्त्री ने किया। 'न्यूक्लियस' के इस अंक का सम्पादन राजस्थान विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग में एसोशिएट प्रोफेसर डॉ० कृष्णगोपाल शर्मा एवं समाजशास्त्र विभाग में एसोशिएट प्रोफेसर डॉ० ललित के० मेहता ने किया।

डॉ० देवेन्द्र दीपक साहित्य अकादमी भोपाल के निदेशक

हिन्दी के प्रख्यात साहित्यकार एवं संस्कृतिकर्मी डॉ० देवेन्द्र दीपक ने मध्यप्रदेश शासन, की साहित्य अकादमी के निदेशक का कार्यभार विगत दिनों ग्रहण किया।

31 जुलाई 1934 को जन्में डॉ० देवेन्द्र दीपक ने म०प्र० शासन उच्च शिक्षा विभाग में पन्ना जिले से प्राध्यापन का कार्य प्रारम्भ किया और पूरे सेवाकाल में अम्बिकापुर, रीवा, सीधी, रतलाम तथा जगदलपुर के महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य किया। डॉ० दीपक अनुसूचित जाति विभाग द्वारा संचालित परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केन्द्र के संस्थापक प्राचार्य रहे। डॉ० दीपक ने अपनी सेवाएँ म०प्र० हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के संचालक के रूप में भी प्रदान कीं। उनके कार्यकाल में तकनीकी विषयों में श्रेष्ठ पुस्तकें प्रकाशित हुईं। उनके सम्पूर्ण कार्यकाल में प्रकाशित पुस्तकें—विविध साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीक के ऐतिहासिक महत्त्व की पुस्तकें मानी जाती हैं।

प्रवासी हिन्दी साहित्यकार संगोष्ठी

पिछले दिनों दिल्ली में 12, 13, 14 जनवरी को साहित्य अकादमी के तत्त्वावधान में तृदिवसीय हिन्दी लेखकों की संगोष्ठी आयोजित हुई। प्रवासी लेखकों की मान्यता थी—''देश में हिन्दी की जड़ों को मजबूत कीजिए, विदेशों में उसका प्रचार-प्रसार और सम्मान स्वत: बढ़ जायगा।''

गोष्ठी में विश्व में फैले हिन्दी लेखकों को भारतभूमि में मान्यता देने की बात कही गयी। उनका कहना था कि वे हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभा रहे हैं, किन्तु उनके साहित्य को उचित मान्यता नहीं मिल रही है। प्रवासी भारतीयों के लिए हिन्दी भाषा मात्र नहीं, आस्था का केन्द्र है। आस्था का यह पौधा भारत में जितना ज्यादा लहलहायेगा विदेशों में उसकी साख उतनी ही बढ़ेगी।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार श्रीलाल शुक्ल ने कहा कि भारत में मौजूद हिन्दी की मुख्यधारा के साहित्यकारों को विदेशों के हिन्दी साहित्यकारों की राह में आने वाली सामाजिक व व्यवहारिक दिक्कतों को समझना चाहिए। मुख्यधारा के हिन्दी मनीषी विदेशों में हिन्दी साहित्य के सृजन व बेहतरी में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि भारत के अन्दर मुख्यधारा की हिन्दी में विदेशों में सृजित हिन्दी साहित्य को स्थान देना चाहिए। इस सन्दर्भ में उन्होंने पूर्व में हुए अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन के उस प्रस्ताव का भी ध्यान दिलाया जिसमें कहा गया था कि विदेशों में हुए हिन्दी लेखन को भारत में हिन्दी के परास्नातक पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाये। अकादेमी के हिन्दी संयोजक प्रसिद्ध साहित्यकार गिरिराजकिशोर ने कहा कि यदि हम भाषाई बन्धुत्व का विकास चाहते हैं, तो हमें इस संगोष्ठी को ही प्रस्थान बिन्दु मानकर चलना चाहिए। रचनात्मकता के विकास की दृष्टि से सभी देशों को संगोष्ठियों का आयोजन करके रचनात्मकता के दायरे का विस्तार करना चाहिए। उन्होंने गिरमिटिया के तौर पर त्रिनिडाड, सूरीनाम, फीजी, मॉरीशस और दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में गये भारतीयों के संघर्ष का विस्तार से जिक्र करते हुए कहा कि भाषाई समन्वय ने उनके (प्रवासी भारतीयों के) बीच जातिगत बन्धनों को तोड़ने में भी सहायता की। हिन्दी ही उस वनवास में जीने का सहारा बनी। भाषा के लिए उनका संघर्ष हमारे संघर्ष से अधिक चुनौतीभरा था। प्रवासी हिन्दी लेखन व भारतीय हिन्दी लेखन के बीच अंतरसम्बन्धों पर साहित्य अकादमी के अध्यक्ष गोपीचंद नारंग ने कहा कि जुड़ाव सिर्फ साहित्य का नहीं, भाषा का भी है। भाषा हमारे अस्तित्व का हिस्सा है, संस्कृति का अंश है। हिन्दी भाषा के प्रति यही नजरिया उसे आज भी विदेशों में प्रासंगिक बनाये हैं। हिन्दी के विकास के सन्दर्भ में उन्होंने यह भी कहा कि भाषाएँ एकरूपता में नहीं बढ़तीं। भाषा का विकास समय, संस्कृति व अन्य भाषाओं से आदान-प्रदान से होता है। हिन्दी तमाम दूसरी भाषाओं से कुछ ले भी रही है और बदले में उन्हें कुछ दे भी रही है।

संगोष्ठी में अनेक प्रवासी भारतीय हिन्दी लेखकों ने भाग लिया। इनमें प्रमुख थे—अभिमन्यु अनत, श्री शीताहुल (मारीशस), कृष्णकुमार (इंग्लैण्ड), वेदप्रकाश'वटुक' (अमेरिका), पुष्पिता (सूरीनाम), वी०आर० जगन्नाथ (त्रिनिडाड), मदनलाल मधु (मास्को, रूस), मृदुला शर्मा (नेपाल), सत्येन्द्र श्रीवास्तव (इंग्लैण्ड), अर्चना पैन्यूली (डेनमार्क), उषा राजे सक्सेना (अमेरिका), प्रेमलता वर्मा (अर्जेण्टीना)।

उरई पुस्तक मेला

बुन्देलखण्ड के ग्रामीण अंचल में जालौन जनपद के उरई नगर में विगत 18 से 23 दिसम्बर 2004 तक छह दिवसीय उरई पुस्तक मेला का आयोजन मण्डपम् परिसर में लोक मंगल द्वारा मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा जिला प्रशासन के सहयोग से आयोजित किया गया। अनेक ख्यातिप्राप्त साहित्यकारों, पत्रकारों तथा कलाकारों ने इसमें भाग लिया।

उरई पुस्तक मेला उद्घाटन करते हुए दैनिक जागरण पत्र समूह के अध्यक्ष योगेन्द्रमोहन गुप्ता ने इस मेला को बुन्देलखण्ड के साहित्य-संस्कृति संवर्धन की महत्त्वपूर्ण घटना बताया। शम्भूनाथ शुक्ल (स्थानीय सम्पादक, अमर उजाला, कानपुर) ने कहा कि इस मेला में जितनी भीड़ उमड़ रही है उतनी कानपुर जैसे महानगरों के पुस्तक मेला में भी देखने को नहीं मिलती है। उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा ने कहा कि उन्होंने अनेक वर्ष पूर्व 'ग्रामीण पुस्तक मेला' का जो सपना देखा था, वह यहाँ साकार हुआ है। समापन समारोह के मुख्य अतिथि हिन्दीसेवी न्यायमूर्ति रामभूषण मेहरोत्रा ने इस मेला को पाठकीय अभिरुचि विकसित करने का श्रेष्ठ माध्यम बताया।

इस अवसर पर नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया ने एक राष्ट्रीय संगोष्ठी 'साइबर युग में पुस्तकों की प्रासंगिकता' आयोजित की। इसमें उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा, शम्भूनाथ शुक्ल, राजेश सीरोठिया (ब्यूरो प्रमुख आउटलुक भोपाल), स्तम्भकार के०पी० सिंह, समीक्षक—डॉ० लालताप्रसाद द्विवेदी, दिनेशकुमार वर्मा (पुरातत्वविद) तथा पंकज चतुर्वेदी, नई दिल्ली ने अपने विचार व्यक्त किये। इसके पूर्व नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित पुस्तक लोकार्पण समारोह में ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित चार पुस्तकों का लोकार्पण किया।

पुस्तक मेला में विभिन्न सांस्कृतिक-साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सांस्कृतिक साहित्यिक हस्तियों को सम्मानित भी किया गया। लोक संस्कृति सेवा निधि की ओर से साहित्यकार डॉ० गंगाप्रसाद गुप्त बरसैंया (छतरपुर) को 'पं० गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर' अलंकरण', लोकगायक हरगोविन्द 'विश्व' (सागर) को 'अमरदान अलंकरण' तथा लोक चित्रकार डॉ० मधु श्रीवास्तव (झाँसी) को 'पं० मन्नालाल मिश्र अलंकरण' प्रदान किया गया। उत्तर प्रदेश हिन्दी सम्मेलन (महिला प्रकोष्ठ) की ओर से उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा को 'इसमत चुगताई सम्मान', डॉ० चित्रा चतुर्वेदी कार्त्तिका को 'महादेवी वर्मा सम्मान', इन्दिरा स्वरूप को 'कस्तूरबा गाँधी हिन्दीसेवी सम्मान' तथा डॉ० अनुराधा बनर्जी को 'सुमति अय्यर हिन्दीसेवी सम्मान (अहिन्दीभाषी)' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर डॉ० चित्रा चतुर्वेदी की नवीनतम कृति 'वैदेही के राम' का लोकार्पण भी किया गया।

ऑक्सफोर्ड और हार्वर्ड लाइब्रेरी की पुस्तकें डिजिटल होंगी

इंटरनेट खंगालने वाले पुस्तक प्रेमियों के लिए एक अच्छी खबर है। गूगल कम्पनी ने दुनिया के कुछ शीर्ष शिक्षण संस्थानों के पुस्तकालयों में रखी पुस्तकों को डिजिटल रूप देने की योजना बनायी है। ये पुस्तकें भविष्य में इंटरनेट पर मौजूद होंगी। गूगल ने ऑक्सफोर्ड, हार्वर्ड, मिशीगन विश्वविद्यालय, स्टैनफर्ड विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों और न्यूयार्क पब्लिक लाइब्रेरी में रखी विरल कृतियों को डिजिटल रूप देने की महत्वाकांक्षी योजना बनायी है। इन विश्वविद्यालयों से गूगल को इस परियोजना के लिए हरी झंडी मिल गयी है। मिशीगन और स्टैनफर्ड के पुस्तकालयों में रखी तमाम पुस्तकों और हार्वर्ड, ऑक्सफोर्ड एवं न्यूयार्क प्रमुख लाइब्रेरी की चुनींदा पुस्तकों को डिजिटल रूप दिया जायेगा। गूगल के उत्पाद प्रबन्धन विभाग के निदेशक सुसान वोजसिस्की के अनुसार ऑनलाइन पर इन संस्थानों में रखी पुस्तकें शीघ्र उपलब्ध होंगी।

'थोड़ी सी जगह' की प्रस्तुति

कवि, आलोचक अशोक वाजपेयी के 65वें जन्मदिन पर इण्डिया इण्टरनेशनल सेंटर में कवि ध्रुव शुक्ल की बनाई फिल्म 'थोड़ी सी जगह' का पहला प्रदर्शन हुआ। इस अवसर पर वरिष्ठ कथाकार कृष्ण बलदेव वैद्य ने अशोक वाजपेयी की कविताओं की एक वीसीडी 'उजाला एक मन्दिर बनाता है' का लोकार्पण करते हुए उनकी कविता 'बहुरि अकेला' से एक काव्य शृंखला भी सुनाई। वाजपेयी के बाल सखा रमेशदत्त दुबे ने डॉ० धर्मवीर की पुस्तक 'अशोक बनाम वाजपेयी : अशोक वाजपेयी' का लोकार्पण करते हुए पुस्तक के बारे में बताते हुए कहा कि यह पुस्तक एक तरह से गाँधी-अम्बेडकर के रुके हुए संवाद को आगे बढ़ाती है। अशोक वाजपेयी ने भी अपनी एक कविता 'पीछे-आगे' का पाठ किया।

'थोड़ी सी जगह' नामक फिल्म सेंट्रल इण्डिया न्यूज नेटवर्क और 'समवेत' भोपाल हैं। जिसकी परिकल्पना की है ध्रुव शुक्ल ने और सम्पादन किया है सुनील शुक्ल ने तथा इस फिल्म के निर्माता हैं पूर्वेंदु शुक्ल। इस फिल्म में अशोक वाजपेयी के शहर सागर की स्मृतियों और कला शहर भोपाल से दिल्ली पहुँचने की तमाम यादें हैं।

'फाइव डिकेड्स' का राष्ट्रपति द्वारा लोकार्पण

राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम ने साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो० गोपीचंद नारंग से अकादेमी के महत्त्वपूर्ण प्रकाशन 'फाइव डिकेड्स' की पहली प्रति ग्रहण की। पुस्तक के लेखक डी०एस० राव ने इस पुस्तक में साहित्य अकादेमी के पिछले पचास वर्षों का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत करके एक महत्त्वपूर्ण और उल्लेखनीय कार्य किया है। कलाम ने इस पुस्तक की प्रशंसा करते हुए इसे बेहतरीन पुस्तक बताया। इस पुस्तक का प्रकाशन अकादेमी के स्वर्ण जयन्ती वर्ष की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। अकादेमी की विभिन्न गतिविधियों के साथ ऐतिहासिक फोटो और अकादेमी के अभिलेखागार से लिए गये दुर्लभ पत्रों और अभिलेखों की प्रतियाँ भी इस पुस्तक में संकलित हैं।

राष्ट्रपति भवन में हुए इस संक्षिप्त और गरिमापूर्ण आयोजन में पूर्व प्रधानमंत्री इन्द्रकुमार गुजराल, शीला गुजराल, गिरिराज किशोर, प्रो० इन्द्रनाथ चौधरी, संस्कृति मंत्रालय में संयुक्त सचिव के० जयकुमार, पद्मा सचदेव, करणजीत सिंह, अकादेमी के सचिव प्रो० के० सच्चिदानन्द और पुस्तक के लेखक डी०एस० राव उपस्थित थे।

—साधना अग्रवाल

अमर हैं हम और हमारा ब्रह्माण्ड

वैदिक विज्ञान एवं कला अनुसन्धान केन्द्र, जोधपुर के तेल उद्योगी 53 वर्षीय श्री योगेशकुमार माहेश्वरी ने **'अमर हैं हम और हमारा ब्रह्माण्ड'** विशालकाय ग्रन्थ की रचना की है। ग्रन्थ की लम्बाई 22 इंच, चौड़ाई 28 इंच, मोटाई 16 इंच, वजन 250 किलोग्राम है। पुस्तक तीन भागों में विभक्त है—प्रथम भाग में अंक, अक्षर, परमाणु, अग्नि, जल आदि विज्ञान का विस्तृत अध्ययन है, द्वितीय भाग में ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति आदि विषय, तृतीय भाग में पृथ्वी पर मनुष्य उत्पत्ति का विज्ञान पर विस्तृत अध्ययन है।

श्री माहेश्वरी इस शोधपरक ग्रन्थ में विगत 20 वर्षों से कार्यरत हैं। ग्रन्थ में 300-400 चित्र भी हैं। उनका कहना है कि सूर्य व भारत भूमि का गहरा सम्बन्ध है। सूर्य जो विरल स्वर्ण से निर्मित है, इसकी स्वर्णमयी किरणें भारतवर्ष को वर्षभर हर तरह की सम्पन्नता देती है, इसीलिए इसका नाम भारत है। प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों ने इस महत्त्वपूर्ण बात पर बहुत अधिक ध्यान दिया। सूर्य विज्ञान के महत्त्व को देखते हुए समस्त मन्दिरों में लिंग इसलिए स्थापित किए। उन्होंने कहा कि तीर्थराज पुष्कर इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, वर्ष में बावन सप्ताह होते हैं, और हर सप्ताह का अपना-अपना अलग महत्त्व है। इसलिए पुष्कर में बावन घाट निर्धारित किए और साथ ही साथ सूर्य ग्रहों के परिक्रमा पथों की चाल देखते हुए पुष्कर में परिक्रमा पथ भी निर्धारित किया।

प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों ने मनुष्यों का पुनर्जन्म सिद्धान्त भी निश्चित किया और माना कि 'आत्मा' में 'सूर्य अंश' विद्यमान होता है अत: मृत्यु के पश्चात अग्नि संस्कार निर्धारित किया, क्योंकि 'सूर्य अंश' सदा सूर्य की ओर जाता है और मृत शरीर से सूर्य अंश को अग्नि संस्कार से ही बन्धन मुक्त किया जा सकता है इसके साथ ही सूर्य अंश को मानते हुए ही सभी तरह के कर्म 'सूर्य' की ओर से किए जाने का प्रावधान किया है।

राष्ट्रधर्म गौरव सम्मान : प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

'राष्ट्रधर्म' मासिक द्वारा संचालित 'राष्ट्रधर्म गौरव सम्मान' के अन्तर्गत वर्ष 2005 के लिए ललित निबन्धकारों तथा नाटक लेखकों से प्रविष्टियाँ आमन्त्रित की गयी हैं। जनवरी, 2002 से दिसम्बर, 2004 के मध्य प्रकाशित ललित निबन्धों एवं नाटकों की पुस्तकों के एक-एक लेखक को रु० 10,000/- (दस हजार) नकद, अंगवस्त्र व मानपत्र देकर सम्मानित किया जायेगा।

उपर्युक्त अवधि में प्रकाशित पुस्तक की तीन प्रतियाँ, पूर्ण परिचय तथा पता लिखा पोस्टकार्ड व टिकट लगे लिफाफे के साथ 31 मार्च, 05 के पूर्व— संयोजक, राष्ट्रधर्म गौरव सम्मान-2005, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226 004 के पते पर आमन्त्रित की गयी है। राजकीय संस्थाओं/संस्थानों से पुरस्कृत पुस्तकें एवं बाल-नाटक मान्य नहीं होंगे।

केरल के हिन्दीसेवी की एक लाख रुपये की सम्मानराशि सुनामी पीड़ितों के नाम

केरल के प्रसिद्ध लेखक प्रो० एन० चन्द्रशेखर नायर ने राष्ट्रपति डॉ० एपीजे कलाम से हिन्दीसेवी सम्मान प्राप्त करने के बाद पुरस्कार की राशि सुनामी पीड़ितों के के लिए दान में दी है। श्री नायर ने राष्ट्रपति भवन में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा का 'गणेशशंकर विद्यार्थी पुरस्कार' प्राप्त करने के बाद प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह को एक लाख रुपये का चेक सौंपा। 81 वर्षीय श्री नायर उन 14 लेखकों में हैं जिन्हें राष्ट्रपति ने वर्ष 2002 के लिए हिन्दी सम्मान प्रदान किया। केरल में करीब तीन दशक तक छात्रों को हिन्दी पढ़ानेवाले श्री नायर ने बताया कि जब उन्होंने पुरस्कार की राशि प्रधानमंत्री राहत कोष में दे दी तो प्रधानमंत्री को काफी खुशी हुई। केरल साहित्य अकादमी के पुरस्कार से सम्मानित श्री नायर ने गतवर्ष प्रसिद्ध चित्रकार राजा रवि वर्मा के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर एक पुस्तक लिखी है।

प्रेमचंद का निवास राष्ट्रीय स्मारक नहीं बनेगा

संस्कृति मंत्रालय के आधिकारिक सूत्रों के अनुसार तकनीकी कारणों से उत्तर प्रदेश लमही में प्रेमचंद के पैतृक निवास को राष्ट्रीय स्मारक घोषित करने की माँग स्वीकार नहीं है पर प्रेमचंद की 125वीं जयन्ती के अवसर पर उनके घर को ठीक ठाक करने और सुरक्षित रखने का निर्णय लिया है। सूत्रों के अनुसार प्रेमचंद की 125वीं जयन्ती इस वर्ष 31 जुलाई से अगले वर्ष 31 जुलाई तक मनायी जायेगी और इस दौरान कई सेमिनार किए जायेंगे तथा प्रेमचंद की कृतियों पर आधारित फिल्मों और नाटकों के प्रदर्शन आदि होंगे। सूत्रों के अनुसार प्रेमचंद की 125वीं जयन्ती को मनाने के लिए गठित 31 सदस्यीय राष्ट्रीय समिति की एक उपसमिति लमही जाएगी और प्रेमचंद के पैतृक निवास किस हालत में है उसका जायजा लेगी। गौरतलब है कि लमही स्थित प्रेमचंद के घर को राष्ट्रीय स्मारक मनाने की माँग हिन्दी के लेखक वर्षों से कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में प्रेमचंद के पुत्रों ने भी अपने जीवनकाल में सरकार से पत्राचार किया था। 1984 में प्रेमचंद की 100वीं जयन्ती के मौके पर यह माँग की गई थी। सूत्रों के अनुसार 125वीं जयन्ती वर्ष में प्रेमचंद की रचनाओं तथा उनके सन्देश को जनता में फैलाने का भी काम सरकार करेगी। प्रेमचंद की स्मृति में एक सड़क का नामकरण तथा उनकी एक प्रतिमा लगाने का भी प्रस्ताव है। सूत्रों के अनुसार राष्ट्रीय समिति की आरम्भिक बैठक हो चुकी है जिसकी अध्यक्षता संस्कृति मंत्री जयपाल रेड्डी ने की थी। समिति के उपाध्यक्ष जनवादी लेखक संघ के अध्यक्ष शिवकुमार मिश्र हैं तथा संयोजक मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पाटी की सांसद सरला माहेश्वरी तथा उर्दू के शायर जुबैर रिज्वी हैं। समिति में सर्वश्री विष्णु प्रभाकर, डॉ० विद्यानिवास मिश्र, सईद मिर्जा, एम०के० रैना, श्रीलाल शुक्ल, प्रभा ठाकुर, जनार्दन द्विवेदी, उदयप्रताप सिंह, ओमप्रकाश वाल्मीकि आदि हैं।

यह उल्लेखनीय है कि प्रेमचंदजी के अनुज स्व० महताब राय (पुत्र : स्व० अजायब राय) तथा रामकुमार, कृष्णकुमार, विनयकुमार, नंदकुमार और कौशलकुमार राय (पुत्र : महताब राय) ने 10.7.1958 को दानपत्र द्वारा नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी को श्री प्रेमचंद स्मारक बनाने के लिए अर्पित कर दिया। दानपत्र सभा के तत्काल सहायक मंत्री श्री शम्भूनाथ वाजपेयी द्वारा टाइप किया गया था। उस समय सभा के मंत्री डॉ० राजबली पाण्डेय थे। दानपत्र में शर्तें थीं—

1. जो कुछ सम्पत्ति स्मारक की होगी उसका स्वामित्व नागरी प्रचारिणी सभा का होगा।

2. सभा को पूर्ण अधिकार है कि उस मकान को गिराकर नया भवन बनाये, कुएँ आदि भी खुदवाएँ तथा स्मारकसम्बन्धी अन्य कार्य करे।

3. उक्त सम्पत्ति कुल की मर्यादा, प्रतिष्ठा तथा समृद्धि और प्रेमचंदजी का नाम स्थायी रहे, इसलिए अर्पण की जाती है।

नागरी प्रचारिणी सभा ने उस स्थल पर प्रेमचंदजी की मूर्ति लगवाकर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर ली। सभा प्रतिवर्ष प्रेमचंदजी की जन्मतिथि पर आयोजन कर अपने अस्तित्व को सिद्ध करने का प्रयास करती है।

संस्था जब व्यक्ति की राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा का माध्यम बन जाती है तब संस्था छोटी होती जाती है और व्यक्ति बड़ा। यही स्थिति नागरी प्रचारिणी सभा की है, जिसे प्रेमचंद का स्मारक बनाना था। व्यक्ति की राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा ने उसे संसद-सदस्य बनाया, दिल्ली में नागरी प्रचारिणी सभा का विशाल भवन बना, जो अब 'सभा' के पूर्व मंत्री का स्मारक है, किन्तु प्रेमचंद का स्मारक नहीं बन सका जिसके लिए परिवारजनों ने सभा को अचल सम्पत्तिदान कर दी थी। अब सरकार भी कहती है कि प्रेमचंद का स्मारक नहीं बनेगा।

प्रेमचंद के स्मारक की नियति प्रेमचंद की कहानी 'सवा सेर गेहूँ' की याद दिलाती है।

अ०भा० साहित्य परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन

''विपरीत परिस्थितियों में अपने लेखन और विचारों के प्रति दृढ़ रहकर अनुभूत सत्य को निर्भीक होकर व्यक्त करना हमारी परम्परा रही है। रचनाकार में ऐसी दृढ़ता के अभाव में रचना-कर्म सम्भव नहीं है। रचनाकार का कर्त्तव्य है कि वह अनुभूत सत्य को ऐसा सर्जनात्मक रूप दे कि आने वाली शताब्दियाँ उस सत्य में अपने समय के अर्थों को खोज और पा सकें।'' ये विचार ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित गुजराती के मूर्धन्य कवि श्री राजेन्द्र शाह ने परिषद् के एकादश राष्ट्रीय अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए प्रकट किये। श्री शाह ने कहा कि भारतीय साहित्य की गंगोत्री भारतीय अध्यात्म-विद्या है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने रचनाकर्म को भारतीय वैचारिक अधिष्ठान से जोड़कर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को पुष्ट करें।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और भारतीय साहित्य विषय पर केन्द्रित परिषद् के इस तीन दिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन का शुभारम्भ दिनांक 7 जनवरी 2005 को राजकोट (गुजरात) में श्री शाह के द्वारा दीपोज्वलन करने के साथ हुआ। गुजरात के सर्वोच्च 'नरसी मेहता साहित्यिक सम्मान' से सम्मानित गुजराती के वरिष्ठ कवि श्री रमेश भाई पारेख और लन्दन में गुजराती के प्रवासी कवि श्री जगदीश दबे के साथ सौराष्ट्र विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० कणु भाई मावार्णी, और मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी के अध्यक्ष तथा इस सत्र के मुख्य वक्ता डॉ० देवेन्द्र दीपक भी मंच पर विराजमान थे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता— परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० बलवन्त जानी ने की। स्वागताध्यक्ष थे— प्रवीण भाई मणियाँर।

परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ० कृष्णचन्द्र गोस्वामी ने परिषद् की गत तीन सत्रों की उपलब्धियों का विवरण अपने प्रतिवेदन में प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज देश के 15 प्रान्तों में 165 स्थानों पर अपना काम है।

श्री बलवन्त जानी ने आभार-प्रदर्शन कर अधिवेशन की व्यवस्थाओं में लगी युवा टोली को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

डॉ० बलवन्त जानी और डॉ० कृष्णचन्द्र गोस्वामी को आगामी त्रि-वर्षीय सत्र के लिए पुनः परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा महामंत्री का दायित्व सौंपा गया।

पं० सीताराम चतुर्वेदी का वर्द्धापन समारोह

साहित्यशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, नाट्यशास्त्र मर्मज्ञ, अनेक भाषाओं तथा काव्य, संगीत, नाट्य आदि कलाओं के सिद्धपुरुष, नाटककार, कथाकार, कवि आचार्य पं० सीताराम चतुर्वेदी ने 27 जनवरी 2005 को अपने रचनात्मक जीवन के 98 वर्ष पूर्ण कर 99वें वर्ष में प्रवेश किया। 27 जनवरी 1907 को श्रौत-स्मार्त्त पारंगत स्व० भीमसेन वेदपाठी के ज्येष्ठ सुपुत्र के रूप में वाराणसी में जन्मे आचार्य चतुर्वेदी का रचना-संसार बीस हजार पृष्ठों से अधिक का है। महाकवि कालिदास ग्रन्थावली, तुलसी ग्रन्थावली (तीन खण्डों में), सूर ग्रन्थावली (पाँच खण्डों में) के सम्पादन के अलावा समीक्षाशास्त्र, नाट्यशास्त्र, भारतीय तथा पाश्चात्य

रंगमंच जैसे विशाल ग्रन्थों के रचयिता, महामना मदनमोहन मालवीय के प्रथम जीवन चरितकार होने के साथ ही शिक्षा, मनोविज्ञान, साहित्य, नाटक, उपन्यास, धर्मग्रन्थों आदि का विपुल साहित्य उन्होंने हिन्दी को प्रदान किया।

उनके पुत्र श्री धर्मशील चतुर्वेदी ने शनिवार गोष्ठी के अन्तर्गत शुभाशंसा मिलन का आयोजन किया। काशी के अनेक साहित्यकार तथा शिक्षाविद् समारोह में सम्मिलित हुए और आकांक्षा व्यक्त की कि शतकपूर्ति के अवसर पर विशाल आयोजन किया जाय जिसमें बीसवीं शताब्दी में काशी में पं० सीताराम चतुर्वेदी के योगदान पर संगोष्ठी तथा सांस्कृतिक आयोजन किया जाय।

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ऑफ नेशनल बॉयोग्राफी

यह ऐसा कोश है जिसका नया संस्करण 117 वर्ष बाद परिवर्धित कर ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी ने प्रकाशित किया है। इसके संशोधन में 12 वर्ष लगे। इस पुस्तक में 60 खण्ड हैं। इसका वजन 128 किलोग्राम है। इसकी कीमत 7500 पौण्ड है। यह अपने किस्म का ऐसा सन्दर्भ ग्रन्थ है जिसे दुनिया में पहली बार तैयार किया गया है। इसमें 54922 व्यक्तियों की जीवन है। जिन व्यक्तियों का राष्ट्र के जीवन में महत्त्वपूर्ण योगदान है, उन्हें इसमें सम्मिलित किया गया है।

जैनेन्द्रकुमार जन्मशती

भारत के उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत के निवास पर 13 जनवरी 2005 को जैनेन्द्रकुमार जन्मशती सन्दर्भ संगोष्ठी का आयोजन हुआ। श्री शेखावत ने कहा—आज कम्प्यूटरों के बढ़ते प्रभाव के कारण अंग्रेजी अनिवार्य होती जा रही है फिर भी हिन्दी की उपेक्षा नहीं, की जानी चाहिए, अन्यथा भारतीय कला और संस्कृति प्रभावित होगी। जैनेन्द्रजी स्त्री-विमर्श के प्रथम कथाकार थे। शेखावतजी ने जन्मशती समारोह में सहयोग करने का आश्वासन दिया। पूर्व प्रधानमंत्री श्री इंद्रकुमार गुजराल ने बताया कि वे किस प्रकार जनपथ कॉफी हाउस में दो आने की कॉफी पर मिलते थे और विभिन्न समस्याओं पर चर्चा करते थे।

विधि विशेषज्ञ, लेखक तथा राजनीतिज्ञ श्री लक्ष्मीमल सिंधवी ने कहा—जैनेन्द्र की भारत के बट्रेण्ड रसेल और जॉर्ज बर्नाड शा थे। शताब्दी के अवसर पर जैनेन्द्रजी के विचारों पर चर्चा की जानी चाहिए। सुप्रसिद्ध कलाविद् कपिला वास्त्यायन ने संस्मरण सुनाते हुए कहा—जैनेन्द्रजी का 7/30 दरियागंज निवास क्रान्तिकारियों का केन्द्र हुआ करता था, जहाँ अंग्रेजी सरकार से लुका-छिपी के कितने किस्से सुनने को मिलते थे। इस गोष्ठी में मृदुला गर्ग, प्रदीप जैन तथा अन्य साहित्यकार सम्मिलित हुए।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी भाषण-माला

दिल्ली विश्वविद्यालय के दौलतराम कॉलेज द्वारा जैनेन्द्रकुमार जन्मशती वर्ष के अवसर पर आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी भाषण-माला का आयोजन हुआ। अध्यक्षता स्व० जैनेन्द्रकुमार के आत्मीय रहे व्यंग्यकार, समीक्षक डॉ० हरीश नवल ने की। जैनेन्द्रजी के उपन्यासों पर डॉ० ओमप्रकाश शर्मा 'प्रकाश' और कहानीकार पक्ष पर श्री महेश दर्पण तथा डॉ० मंजुलता सिंह ने वक्तव्य दिए। वक्ताओं ने जैनेन्द्र को अपने समय का एक बड़ा रचनाकार सिद्ध किया जिसने प्रेमचंद की जमीन तोड़कर अपना स्थान बनाया। अध्यक्षीय सम्बोधन में जैनेन्द्रजी के संस्मरण सुनाते हुए डॉ० हरीश नवल ने 'सुनीता' जैसे उपन्यास के लेखक को उत्तर-आधुनिक काल का पहला कथाकार कहा।

1.98 लाख पाण्डुलिपियाँ मिलीं

पाण्डुलिपि मिशन के तहत 10 दिवसीय सर्वेक्षण में वाराणसी जिले में एक लाख 89 हजार 248 दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई हैं। इसमें 16वीं व 17वीं सदी की ताड़पत्र, भोजपत्र और कागज पर लिखी पाण्डुलिपियाँ भी है। ताड़पत्र पर बंगला में लिखी महाभारत, कालिदास की रघुवंशचिन्तामणि, 1967 में लिखी काम्येष्टि आदि प्रमुख हैं।

बल्लभराम शालिग्राम सांगवेद विद्यालय रामघाट में संवत् 1675 की सौत्रामय सूत्रम, संवत् 1676 की धर्म प्रश्न व्याख्यानम्, 1729, 1757 की महाभारत, बंगला में ताड़पत्र पर लिखित तत्त्वचिन्तामणि है।

ज्ञान प्रवाह में पाँच सौ साल पुरानी कालिदास की कृति की पाण्डुलिपि उपलब्ध है। पार्श्वनाथ जैन संस्थान करौंदी में आदि शंकराचार्य द्वारा लिखित हिन्दू कर्मकाण्ड पर हरिस्त्रोत्रम है। ब्रज विद्या मन्दिर में तिब्बती भाषा की अधिधम्म पिटक, आयुर्वेद से सम्बन्धित ताड़पत्र पर विषय त्रिपिटक (विनय अभिधम्म), सूतपिटक उपलब्ध है। औरंगजेब की मन्दिर-मस्जिद पर 1069 हिजरी में जारी फरमान है, जो फारसी में है।

अजितकुमार बापुली के पास तंत्र शास्त्र से सम्बन्धित बंगला में लिखित 15 पाण्डुलिपियाँ हैं। राजकीय क्वींस कालेज भी इस मामले में सुदृढ़ है जहाँ तात्पत्र पर तमिल, द्रविण, बंग भाषा की लिपि के अलावा मैथिलीलिपि, शारदालिपि में पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं।

रामापुरा के डॉ० भृगु भादुड़ी के पास कागज, तालपत्र तथा लकड़ी पर लिखित हजारों पाण्डुलिपियाँ है। मुमुक्षु भवन, अस्सी में तत्व प्रदीपिका-152, कार्तिक महात्म्य-30, छांदोग्य उपनिषद, नक्षत्र शास्त्र, ज्योषशास्त्र है। यह सभी 1722 संवत् की पाण्डुलिपियाँ हैं। संरक्षण के अभाव में पाण्डुलिपियाँ नष्ट हो रही हैं। समुचित संरक्षण की जानकारी न होने के कारण कितनों ने उसे गंगा में प्रवाहित कर दिया।

बाल साहित्यकार श्रीप्रसादजी का जन्मदिन

वाराणसी के बाल रंगमण्डल ने बाल साहित्यकार श्रीप्रसादजी का जन्मदिन मनाया। इस अवसर पर डॉ० काशीनाथ सिंह ने कहा—दुनिया के सभी बड़े लेखकों ने बच्चों लिए लिखा है। बाल साहित्य लिखने के लिए उनकी भावनाओं के स्तर तक पहुँचना होता है। नाट्यकर्मी नीलकमल चटर्जी ने कहा कि बच्चों के बीच वृद्ध बाल साहित्यकार का जन्मदिन मनाना उत्साहवर्द्धक और कई मामलों में अनूठा है। आधुनिक संचार माध्यमों ने बच्चों के लिए काफी सम्भावनाएँ पैदा की हैं। डॉ० श्रीप्रसाद ने अपने बचपन के संस्मरण सुनाते हुए बाल कविताएँ सुनायीं।

सुनामी से एक सोच

हिमालय से कन्याकुमारी तक एक संवेदना सेतु की अपेक्षा है, आज कन्याकुमारी का समुद्र उफन रहा है। जन-धन प्रभावित हो रहा है। उत्तर की संवेदना दक्षिण के कष्ट में सहभागी बना रही है। कभी हिमालय भी विस्फोट करेगा तब दक्षिण को उत्तर की बाँह पकड़कर सहारा देना होगा। यह तभी सम्भव है जब एक राष्ट्र हो, राष्ट्र की एक भाषा हो, राष्ट्र की एक संवेदना हो। **—पु०दा०मो०**

सम्प्रेषण और रेडियो-शिल्प

विश्वनाथ पाण्डेय

प्रथम संस्करण : 2005
ISBN : 81-7124-408-4
विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
मूल्य : 250.00

रेडियो विश्व का प्रमुख सम्प्रेषण माध्यम रहा है और आज भी टी०वी० के अतिशय विकास के बावजूद भारत ऐसे देश में जहाँ कतिपय कारणों से टी०वी० की पहुँच देश की बहुसंख्यक जनता तक नहीं है, रेडियो ही एकमात्र माध्यम है जो जनता को समाचार, शिक्षा तथा मनोरंजन प्रदान करता है।

पिछले दिनों सुनामी लहरों के कहर ने जब अण्डमान निकोबारवासियों को कुछ समय के लिए दुनिया से दूर कर दिया था, तब आकाशवाणी एकमात्र माध्यम था जो पीड़ित जन की वाणी बनकर न केवल अण्डमान के अलग-अलग द्वीपों के लोगों को आश्वस्त किया बल्कि हजारों प्रभावित परिवारों के सन्देश प्रसारित कर उनके परिवारों को मिलाने या लहरों के कहर से बच जाने की सूचना दी। वस्तुत: आकाशवाणी कई दिनों तक अण्डमानवासियों के लिए 'आकाश-वाणी' सिद्ध हुई। पोर्ट ब्लेयर स्थित आकाशवाणी केन्द्र लहरों के कहर से त्रस्त परिवारों के बीच सूचना-संवाहक का काम किया, जिससे अनेक परिजन एक-दूसरे से जुड़ सके।

आज रेडियो का वह स्वरूप नहीं रहा। आज आप हाथ में या जेब में रखकर, ट्रांजिस्टर के माध्यम से देश-दुनिया से जुड़ सकते हैं। विगत शताब्दी में रेडियो ने सामाजिक परिवर्तन को दिशा दी है। आज रेडियो को जनमानस की आस्था का स्वर और चेतना का संवाहक बनना होगा।

रेडियो के विभिन्न आयाम हैं। माइक्रोफोन से रेडियो (ट्रांजिस्टर) तक की यात्रा रोमांचक है। 'एको अहं बहुस्यामि' का अनुसरण करते हुए रेडियो बहुरूपों में हमारे सम्मुख प्रकट होता है अत: इसका अध्ययन भी आह्लादकारी है। यह पुस्तक रेडियो के सभी पक्षों पर गहराई से अध्ययन प्रस्तुत करती है। विषय का प्रतिपादन और गम्भीर विवेचन इस पुस्तक की अपनी विशेषता है।

कथन

हिन्दी साहित्य, कविता तथा अन्य क्षेत्रों में उपलब्धियों के लिए विद्वानों को पुरस्कृत करते समय मुझे मुनि तिरुवल्लुवर की पंक्तियाँ याद आ रही हैं जो उन्होंने दो हजार साल पूर्व कही थीं—एक इंसान जितना अधिक ज्ञान प्राप्त करेगा उतना ही वह दुष्प्रभाव से बचेगा। ज्ञान एक किला है जिसे कोई दुश्मन भेद नहीं सकता।

—राष्ट्रपति ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

हिन्दी केवल भाषा नहीं बल्कि हमारी संस्कृति है। वैश्वीकरण के इस दौर में भी हिन्दी अपनी ताकत का पूरा अहसास करा रही है। विदेशी टीवी कम्पनियों द्वारा हिन्दी में चैनल लाना इसका प्रमाण है। **—अर्जुन सिंह,** मानव संसाधन विकास मंत्री

सतयुग, त्रेता और द्वापर युग में, जब जन्माधारित सामंतवादी हुकूमतें हुआ करती थीं, शुंभ-निशुंभ, मधु-कैटभ, महिषासुर वगैरह एकाधिक मंवतरों में ही प्रकटाते थे। लोकतांत्रिक कलियुग में वे हर पाँच बरस के अन्तराल में और कभी मध्यावधि में ही प्रकट होने लगे हैं। नतीजतन स्त्री शक्ति की दरकार कुछ अधिक ही पड़ने लगी है, पौरुषमय सत्ताधीशों को। शायद इसीलिए अब एक तट से विसर्जित की गई शक्ति को दूसरे तट पर खड़ी प्रतिस्पर्धी टोली सादर अपने गठजोड़ में न्योतने लगती है।

समझ-झरोखे बैठकर जग का यह जो मुजरा हम सब गत छह दशकों से देख रहे हैं, यह तब तक चलेगा, जब तक देश की आधी आबादी लोकतंत्र के तीनों पायों : विधायिका, न्यायपालिका और कार्यपालिका का अर्द्धांश नहीं बन जाती। रही बात चौथे पाये यानी मीडिया की, वहाँ बात तेजी से परवान चढ़ रही है।

आगे का हाल (छोटे) पर्दे पर देखें।

—मृणाल पाण्डे

ऐसे हैं हमारे पुस्तकालय

हमारी तथाकथित लाइब्रेरियाँ हैं जो पुस्तकों का संचय तो करती हैं, ज्ञान का संवर्धन नहीं और न ही उनके प्रबन्धकों को दरकार है कि किसी पाठक को कम से कम तकलीफ देकर पुस्तकें मुहैया कराएँ। हमारे प्रमुख पुस्तकालयों में अद्‌भुत पुस्तकें हैं (शुक्र है उन्हें निकाल बाहर करने योग्य नहीं समझा गया है अभी) लेकिन उन्हें रैक से उठाने का मतलब है दो-चार छटांक धूल फाँकना। पुस्तकों की इस व्यवस्था को किताब गोदाम कहना ज्यादा उपयुक्त होगा। पुस्तकें अपने स्थान पर हों तो यह करिश्मा ही मानिए। कई जगह तो पाठकों को पुस्तकों के चयन की सुविधा नहीं है। आप पुस्तक का नाम, लेखक, क्रमांक आदि की स्लिप भर दीजिए और दो दिन बाद पता कीजिए। इन दो दिनों चूँकि सम्बन्धित व्यक्ति छुट्टी पर रहा होगा इसलिए... ।किसी तरह पुस्तक मिल भी जाए तो उसके महत्त्वपूर्ण अंश गायब होने की सम्भावना को कम मत आंकिए। दिल्ली की ही रतन टाटा लाइब्रेरी के बाहर मात्र 35 पैसे की दर से जीरॉक्स की सुविधा के बावजूद पुस्तकों का फटना कम जरूर हुआ हो, बन्द नहीं हुआ है। इस मामले में ब्रिटिश काउंसिल या अमेरिकन सेंटर की व्यवस्था स्पृहणीय है। आश्चर्य बस यही होता है कि 'अपनी' लाइब्रेरियों में जो भारतीय कर्मचारी ऊँघते रहकर समय काटता है वही इन पुस्तकालयों में पूरी सक्रियता और शालीनता से मुस्कराकर आपकी मदद के लिए तत्पर रहता है। अपने विदेशी आकाओं को तो वह अच्छा भारतीय होने का सबूत दे सकता है। (अन्यथा नौकरी को ही खतरा तो नहीं!) पर स्वदेशी नियोक्ताओं या पाठकों की उसे परवाह नहीं।

—ओमा शर्मा

भारत सरकार को एक राष्ट्रीय भाषा आयोग का गठन करना चाहिए जिसका कार्य सभी भारतीय भाषाओं के मध्य सौहार्द्र का निर्माण करना हो। ऐसा आयोग यह प्रयास करे कि सभी भारतीय भाषाएँ अपने-अपने क्षेत्रों में उन्नति करें तथा आपस में संवाद के लिए हिन्दी का प्रयोग करें। मुझे बीजिंग विश्वविद्यालय में एक चीनी छात्रा का वह मासूम प्रश्न कभी नहीं भूलता, जब उसने पूछा था कि क्या आप लोगों में हिन्दी किसी को नहीं आती?

—डॉ० महीप सिंह

पं० गौरीशंकर हीरानंद ओझा प्राचीन लिपियों पर अपना ग्रन्थ लिख रहे थे तो पाश्चात्य विद्वानों ने उनसे आग्रह किया कि वे यह ग्रन्थ अंग्रेजी में लिखें। ओझाजी ने उत्तर दिया, ''आप लोगों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए मैंने अंग्रेजी पढ़ी। अब आप लोगों को मेरे ज्ञान की आवश्यकता है तो आपको हिन्दी पढ़नी होगी।''

उर्दू भाषा देश का एक हिस्सा काटकर पाकिस्तान बनवा सकती है तो तमिल, तेलगू और गुरुमुखी अपने अलग साम्राज्य का निर्माण क्यों नहीं कर सकतीं? **—भानुप्रताप शुक्ल**

अंग्रेजी हमें विरासत में मिली है। हिन्दी बोलने में आम भाषा के प्रचलित शब्दों में भी अंग्रेजी शामिल हो गयी है। रेल को 'लौहपथ गामिनी' कहने के पक्ष में आज कोई नहीं है। वास्तव में अंग्रेजी के लिए संकीर्ण भाव नहीं रखना चाहिए। वैश्वीकरण के दौर में अंग्रेजी लाभदायक भी है।

—बालेश्वर राय, सचिव, राजभाषा,
गृहमंत्रालय, भारत सरकार

पुस्तकालयों का होना जरूरी

एक सभ्य एवं समृद्ध समाज के सृजन के लिये शिक्षा आवश्यक है। रोटी, कपड़ा एवं मकान के बाद शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिये। वर्तमान समय में शिक्षा दो रूपों में शिक्षार्थियों को प्रदान की जा रही है—औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा। औपचारिक शिक्षा वह है जो किसी संस्था के अन्तर्गत रहकर प्राप्त की जाती है एवं अनौपचारिक शिक्षा वह है जो किसी संस्था अथवा कालेज में दाखिला लिये बिना प्राप्त किया जा सके। शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर औपचारिक शिक्षा देने का कार्य प्राथमिक विद्यालय करते हैं। प्राथमिक विद्यालय शिक्षार्थी रूपी बीज तैयार करते हैं तो माध्यमिक विद्यालय महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय उस शिक्षार्थी रूपी बीज को पोषक पदार्थ प्रदान करके उसे एक फलदार वृक्ष बनाते हैं।

जिस प्रकार से एक मकान का नींव अथवा फाउण्डेशन जितना मजबूत होता है उस मकान की आयु उतनी ही होती है। ठीक उसी प्रकार जिन शिक्षार्थियों का प्राथमिक स्तर जितना मजबूत होता है वह विद्यार्थी जीवन में प्रगति के विविध आयामों को छूता है। प्राथमिक स्तर पर शिक्षा का उन्नयन हो इसके लिये प्राथमिक विद्यालय को एक बौद्धिक प्रयोगशाला का रूप दिया जाय। यह तभी सम्भव होगा जब उसमें एक समृद्ध पुस्तकालय है। विद्यार्थियों को उनके पाठ्य-सामग्री, मनोरंजनात्मक साहित्य, नैतिक साहित्य से सम्बन्धित पुस्तकें पुस्तकालय के माध्यम से बिना किसी मूल्य के उपलब्ध कराया जाना चाहिये जिससे उनका बौद्धिक व नैतिक विकास साथ-साथ हो सके। **—ज्ञानप्रकाश चौबे,** बलिया

आगामी प्रकाशन : विश्वविद्यालय प्रकाशन

संस्कृत का समीक्षात्मक काव्यशास्त्र

प्रो० राजेन्द्र मिश्र

कुलपति

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी

काव्यशास्त्र, अलंकार अथवा साहित्यशास्त्र के नाम से उद्‌भूत एवं विकसित शास्त्रविशेष की गहनसमीक्षा का सार्थक प्रयत्न सम्भवत: उस रूप में अब तक नहीं किया जा सका है जिस रूप में वह सुकुमार-मति छात्रों एवं युवा शोधार्थियों को अभीष्ट है। प्रौढ़ों एवं नव्यों की विषयग्रहण-शक्ति स्वभावत: भिन्न होती है। इस तथ्य को एक सहृदय प्राध्यापक ही भलीभाँति जानता है।

इलाहाबाद एवं हिमाचलप्रदेश शिमला विश्वविद्यालय में एक अत्यन्त लोकप्रिय एवं यशस्वी प्राध्यापक के रूप में ख्याति अर्जित करनेवाले, सहृदय कवि एवं समीक्षक, सम्प्रति सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में कुलपतिपदाभिषिक्त प्रो० राजेन्द्र मिश्र ने एक सुचिन्तित समीक्षात्मक संस्कृत काव्यशास्त्र का प्रणयन कर उस कमी को पूर्ण कर दिया है। प्रो० मिश्र-प्रणीत इस काव्यशास्त्र में न केवल विवेच्य विषयों में परिवर्धन किया गया है प्रत्युत यथावसर पाश्चात्य काव्यशास्त्रीय तत्त्वों के साथ समानधर्मा संस्कृत काव्यशास्त्रीय तत्त्वों की तुलनात्मक समीक्षा भी की गई है।

प्रो० राजेन्द्र मिश्र ने कतिपय महाकवियों के काव्यग्रन्थों से भी समीक्षा के मानक एकत्र किये हैं तथा उसे भी समसामयिक अलंकारशास्त्रियों की समीक्षा का आधार माना है। ग्रन्थ के अन्तिम अध्याय में अर्वाचीन संस्कृत काव्यशास्त्र की अपेक्षा एवं सर्जना पर भी प्रभूत सामग्री दी गई है। यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि प्रो० मिश्र स्वयं भी अभिराजयशोभूषणम् सरीखे अभिनव काव्यशास्त्र के लेखक हैं।

आपका पत्र

'भारतीय वाङ्मय' का जनवरी अंक मिला। सदा की तरह बहुत कुछ जानने समझने के लिए है इसमें। छोटी-छोटी घटनाएँ भी हमें कितना अधीर बना देती हैं। मेरे जैसा वृद्ध व्यक्ति तो अब कहीं आ-जा नहीं सकता, उसे घर बैठे ही सब कुछ बताया जाता है—'भारतीय वाङ्मय' जैसी पत्रिकाओं से। यशस्वी लेखक जैनेन्द्रकुमारजी की शताब्दी हमारे सामने है। मैं तो बहुत गतिमय हो नहीं सकता, लेकिन फिर भी कहीं-कहीं तो जाऊँगा ही।

— विष्णु प्रभाकर, दिल्ली

'भारतीय वाङ्मय' पत्रिका धीरे-धीरे निखर कर हिन्दी की सम्पूर्ण सूचना-समीक्षा पत्रिका का साफ-सुथरा रूप लेती जा रही है। समीक्षाएँ में बहुत चुस्त और सटीक होती हैं तथा कवर पृष्ठ की सामग्री बहुत सामयिक और अनिवार्य रूप से पठनीय होती है। हिन्दी की यह स्तरीय सेवा आप द्वारा सम्पन्न हो रही है। साथ ही इस वय में ? मेरा हार्दिक साधुवाद स्वीकारें। बधाईयाँ और मंगलकामनायें।

— विवेकी राय, गाजीपुर

भाव-बोध से सम्पन्न विचारपूर्ण सम्पादकीय, माहभर की साहित्यिक घटनाओं के समाचारों और पुस्तक समीक्षाओं से परिपूर्ण 'भारतीय वाङ्मय' अपनी संक्षिप्तता में भी विराट महत्त्व का सिद्ध हो रहा है। इसमें कविता और 'कथन' का समावेश सुयोग्य और कल्पनाशील सम्पादकत्व का परिचायक है। ये दोनों स्तम्भ अपने लघु रूप में भी लोकव्यापी संवेदना और विडम्बना को समग्रता में उजागिर और विचार प्रेरित करते हैं। प्रकाशकीय, लेखकीय और पाठकीय दुनिया में इसकी एक अहमियत बन रही है। यदि पृष्ठ संख्या बढ़ा सकें तो आयाम और विस्तार की दृष्टि से और अच्छा होगा।

— केशवशरण, सिकरौल, वाराणसी

'भारतीय वाङ्मय' छोटी-सी (तात्पर्य कम पृष्ठों की) इस पत्रिका में भारतभर की साहित्यिक गतिविधियों की झलक मिलती है।

— दयानन्द वर्मा, नयी दिल्ली

हैं ये पुस्तक ज्ञान ज्योति इनको अपनावो,
जो कवि लेखक इन्हें रचे हैं, उनके गुण गावो।
ज्ञानराशि के कोष हैं संचित, इन्हें धरोहर समझो,
धन की चोरी प्रतिक्षण होती, इन्हें सुरक्षित समझो।
हर शिक्षित के अस्त-शस्त्र हैं, ज्ञान-ग्रन्थ यह सारे,
इसीलिए पाठकगण को हैं, ये प्राणों से प्यारे॥

— घनश्यामकृष्ण पाठक, बलरामपुर

'भारतीय वाङ्मय' के जनवरी 2005 अंक में एक बार पुन: अत्यन्त मार्मिक सम्पादकीय 'कितने हिन्दुस्तान' पढ़ने को मिला आपकी लेखनी जिस विषय का स्पर्श करती है उसी में जीवन-संचरित हो उठता है। भारत की परिस्थिति आज जैसी है—भाषा ही नहीं अन्य तमाम साझा प्रश्नों को सोचते समय उसका ध्यान रखना ही होगा। अंग्रेजी का विजय अभियान भारतीय भाषाओं को हतप्रभ करने में जुटा है और भारतीय भाषाएँ परस्पर शंका-सन्देह से घिरी हैं। जिन्होंने दक्षिण में राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का विरोध किया—वे अपने भीतर से सम्पर्क भाषा विकसित नहीं कर सके। दक्षिण की सम्पर्क भाषा, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ या मलयालम नहीं बनीं, अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ा। वस्तुत: अभी भी हम रियासती मानसिकता में जी रहे हैं।

— डॉ० कृष्णचन्द्र गोस्वामी, भरतपुर

इस बार सम्पादकीय का विषय बड़ा मार्मिक है। निश्चय ही अब भारतीय अपनी पहचान प्रान्तीय रूप में दर्शता है। आदमी जाति और धर्म में तो बँटे ही थे, अब एक पहचान और उभर रही है, इसके अलावा वह बसपा, भाजपा, माकपा, सपा, कांग्रेसी लोगों की पहचान में भी बँटा दिखता है।

हमारे लोकतंत्र की सबसे बड़ी विडम्बना यह है जो तंत्र लोक के द्वारा सम्पादित होता है वह लोक अब तंत्र (बाहुबलियों, माफियों, अपराधियों) हाथों परतंत्र जैसा है। अगर ऐसी ही स्थिति बनी, बनती रही तो बहुत सम्भव सारा तंत्र इनका हो जायेगा। लोक अपवाद स्वरूप दिखावा रह जायेगा।

— अमरनाथ शुक्ल, दिल्ली

अघोरपंथ और संत कीनाराम

डॉ० सुशीला मिश्र

प्रथम संस्करण : 2004
ISBN : 81-7124-396-7
विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
मूल्य : 250.00

16वीं-17वीं शताब्दी के कालजयी औघड़ कीनाराम साक्षात् शिव थे। जनश्रुतियों के अनुसार शिव की नगरी काशी के शिवाला स्थित क्रीं-कुण्ड के औघड़ तख्त पर बाबा कीनाराम का सन् 1619 में अभिषेक हुआ था। उस समय उनकी उम्र मात्र 19 वर्ष थी। अभिषेक के पूर्व वे अपने तपस्याकाल में माँ हिंगलाज के दरबार में अपनी तपस्या पूर्ण करने पहुँचे। वहाँ उन्होंने घोर तपस्या की। माँ हिंगलाज ने प्रसन्न होकर कहा—''तू अब काशी जा। मैं भी आऊँगी और वहीं रहूँगी।'' यहाँ भैरव भीमलोचन ने उन्हें दर्शन दिये। माँ की आज्ञा से बाबा कीनारामजी काशी स्थित महाश्मशान हरिश्चन्द्र घाट आये। जहाँ दत्तात्रेय भगवान् के रूप में बाबा कालूरामजी ने औघड़ तख्त क्रीं-कुण्ड के पीठाधीश्वर पद पर बाबा कीनाराम का अभिषेक किया। कहा जाता है माँ हिंगलाज क्रीं-कुण्ड में हर पल अदृश्य स्वरूप में विद्यमान हैं। बाबा कीनाराम अघोरपंथ के अग्रणी संत थे, उनके भक्तिपद अघोरपंथ के सूत्र हैं। उनके अनेक चमत्कार हैं जो भक्तों को प्रभावित करते हैं, अघोरपंथ की यह परम्परा क्रीं-कुण्ड में आज भी साक्षात् हैं।

पुस्तक-प्राप्ति

अक्षर जो मुखर हुये (कविता)
नर्मदेश्वर उपाध्याय
12ए, शिवकुटी, इलाहाबाद
मूल्य : 100.00

नाचत सखि सारो संसार (कविता)
डॉ० दिनेशचन्द्र 'दिनेश'
चन्द्रकमल प्रकाशन, लखनऊ-228 016
मूल्य : 70.00

ईज़ी सक्सैस (व्यक्तित्व विकास)
राजीव अग्रवाल
भगवती पॉकेट बुक्स, आगरा-2
मूल्य : 50.00

संस्कृत-भाषा सीखने की सरल और वैज्ञानिक विधि
आचार्य भगीरथप्रसाद त्रिपाठी
डॉ० वागीश शास्त्री
मूल्य : 70.00

योग चूडामण्युपनिषद
वागीश शास्त्री
मूल्य : 40.00

एक सनातनी : जर्मनी में अड़सठ दिन
वागीश शास्त्री
मूल्य : 50.00

आतङ्कवादशतकम्
वागीश शास्त्री
मूल्य : 60.00

आचार्य डॉ० वागीश शास्त्री
डॉ० वास्तोस्पति शास्त्री
मूल्य : 70.00
सभी पुस्तकों के प्रकाशक
वागयोग चेतना प्रकाशन
बी० 3/131 ए, शिवाला, वाराणसी

युग प्रबोधक तुलसीदास
(नाटक)
जगदीशप्रसाद बिलगैयाँ
बिलगैयाँ प्रकाशन, हटवारा, तालबेहट-284126

साम्राज्यवाद बेनकाब
सोहन शर्मा
संयोग प्रकाशन, मुम्बई-401105
मूल्य : 100.00

मड़ई-2004

सम्पादक : **डॉ० कालीचरण यादव**
रावत नाथ महोत्सव समिति, विलासपुर

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी 'मड़ई' का प्रकाशन उसी भव्यता से हुआ है। 'मड़ई' में सम्पूर्ण भारत की लोकसंस्कृति के पुनरुद्धार का प्रयास है। लुप्त होती संस्कृति को पुनर्जीवित कर संरक्षण प्रदान करना इसका लक्ष्य है। लोकचिंतन, लोकभाषिक दर्शन, ऋग्वेदिक चिंतन, लोकरक्षण और प्रतिरोध : अनुचिंतन, भारत को लोकांचल शीर्षकों के अन्तर्गत विद्वानों के लेख संगृहीत हैं।

प्रतीक्षा समाप्त

• अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
• रामधारी सिंह 'दिनकर' • हजारीप्रसाद द्विवेदी
• बनारसीदास चतुर्वेदी • विष्णु प्रभाकर
• रायकृष्णदास • रामविलास शर्मा • अज्ञेय
• विद्यानिवास मिश्र • श्यामनारायण पाण्डेय
• जैनेन्द्रकुमार सहित
अनेक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय विद्वानों द्वारा
मुक्तकण्ठ से प्रशंसित

हिन्दी कथा साहित्य की प्रेम-परक शैली के सुविख्यात कथाकार श्री द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' की सम्पूर्ण रचनाओं का अनूठा संग्रह

निर्गुण रचनावली

कुल पाँच खण्डों में-एक सौ चालीस से अधिक कहानियाँ, छः उपन्यास, पचास से अधिक गीत व कविताएँ, संस्मरण, लेख, साक्षात्कार, पत्र एवं अन्य महत्त्वपूर्ण दस्तावेज।

मई मध्य तक प्रकाशित

अपनी प्रति सुरक्षित करवाएँ

मूल्य : सजिल्द : 4000 रुपया मात्र (पाँच खण्ड)
अजिल्द : 2500 रुपया मात्र (पाँच खण्ड)

सम्पादक
एल० उमाशंकर सिंह

प्रकाशक
विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी

प्रख्यात कथाकार द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' की
समग्र रचनाओं का संकलन

निर्गुण रचनावली

(विश्वविद्यालय प्रकाशन की अनोखी प्रस्तुति)

प्रेम के अभाव में मनुष्य जिन्दा नहीं रह सकता। वह प्रेम माँ का हो, बाप का हो, भाई-बहन का हो, पत्नी/प्रेमिका का हो या मित्र का। प्रेम चाहिए ही चाहिए। कभी-कभी जीवन में प्रेम की डोर एक जगह से टूटती है तो दूसरी जगह से जुट जाती है। कभी-कभी यह एकपक्षीय भी हो है 'तुम करो या ना करो, पर प्रेम मैं करता रहूँगा।' चित्रकला, संगीतकला या लेखनकला, इस प्रेम और कला को दुनिया की परम पवित्र वस्तु (तत्व) माननेवाले प्रेमपरक शैली के महान कथा सर्जक श्री द्विजेन्द्रनाथ मिश्र 'निर्गुण' का सारा कथा-संसार प्रेम और कला से सम्पृक्त है। उनकी कहानियों में 'साबुन' हो या 'लाजवन्ती', 'छलनामयी' हो या 'तस्वीरें', 'हृदय का घाव' हो या 'प्रेमा', 'आर्टिस्ट' हो या 'पूर्ति', 'रावण' हो या 'बेटी' सभी कहानियों के पात्र प्रेम से ओत-प्रोत हैं। कहीं पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय प्रेम है तो कहीं समाज और संस्कारों के प्रति। इसी कला और प्रेम के उपासक 'निर्गुण'जी जीवनभर समीक्षकों की उपेक्षा सहते रहे, इसका सीधा अर्थ हो सकता है कि या तो वे आलोचक संवेदनशून्य रहे या फिर उनके लिए प्रेम और कला दुकान पर बिकनेवाली कोई वस्तु सदृश रही। किन्तु महान साहित्यकारों व सुधि पाठकों ने उसके मर्म को समझा। वे उन्हें सर-आँखों पर बैठाये, तभी तो उन्हें लिखना पड़ा—''जितना पाठकों का प्यार मुझे मिला है, उतना कम लोगों को प्राप्त होता है।'' वे भुक्खड़ लोगों के लिए लिखते हैं कि ''जीवन का लक्ष्य रोटी और सेक्स तक सीमित नहीं होना चाहिए।'' उनकी सीधी मान्यता है कि—''जब तक प्रेम और कला, आस्था और संवेदना, सहानुभूति और संस्कृति समाज के आधार स्तम्भ हैं तभी तक समाज है।'' उनकी इन्हीं विशेषताओं के कारण प्रख्यात विद्वान् आचार्य मंगलदेव शास्त्री को लिखना पड़ा कि—''अपनी विशिष्ट उपलब्धियों के कारण निर्गुणजी भारत में ही नहीं, विदेशों में भी अपनी महत्त्वपूर्ण पहचान रखते हैं।'' राष्ट्रकवि दिनकर ने लिखा कि—''जब तक हिन्दी में निर्गुणजी जैसे कहानीकार कहानी लिख रहे हैं, यह नहीं कहा जा सकता कि प्रेमचंद के बाद हिन्दी में उच्चकोटि की कहानियों का लिखना बन्द हो गया। निर्गुणजी को हम किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के कहानीकार के समक्ष रख सकते हैं। निर्गुण जैसे कलाकार के होते हुए अन्य भाषाओं के कहानीकारों की ओर दौड़ने की क्या जरूरत है?'' प्रख्यात साहित्यकार विष्णु प्रभाकर ने लिखा कि—''निर्गुणजी की कहानियाँ पढ़ते समय हमें शरत और प्रेमचंद की एक साथ याद आती है।''

निर्गुणजी की मान्यता रही कि—''समाज में व्याप्त राजनैतिक, समाजशासत्रीय, दार्शनिक, वैज्ञानिक और वैचारिक घात-प्रतिघातों को स्वीकार किये बिना न कोई कविता बन सकती है, न कहानी और ना ही उपन्यास।'' वे आगे स्वीकारते हैं कि—''साहित्य मे जो कुछ लिखा जाय, उनका हृदय से सम्बन्ध अवश्य हो।''

इस प्रकार निर्गुण मानवीय संवेदना के क्षितिज पर पूर्णिमा के चाँद की तरह शीतल, धवल, चाँदनी को बिखेरते नजर आते हैं। उनकी ग्रन्थावली 'निर्गुण रचनावली' पठनीय ही नहीं, प्रेम और कला के पुजारियों के लिए रामायण और गीता की तरह घर-घर में संग्रहणीय है। **—एल० उमाशंकर सिंह**

अध्यात्मपरक ग्रन्थ

मनीषी, संत, महात्मा

प्रकाश पथ का यात्री	*योगेश्वर*	160.00
अघोर पंथ और संत कीनाराम	*डॉ० सुशीला मिश्र*	250.00
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान	*सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव*	150.00
करुणामूर्ति बुद्ध	*डॉ० गुणवन्त शाह*	25.00
महामानव महावीर	*डॉ० गुणवन्त शाह*	30.00
बाबा नीब करौरी के अलौकिक प्रसंग	*बच्चन सिंह*	250.00
नीब करौरी के बाबा	*डॉ० बदरीनाथ कपूर*	20.00
उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा	*डॉ० गिरिराज शाह*	100.00
सोमबारी महाराज	*हरिश्चन्द्र मिश्र*	50.00
सन्त रैदास	*श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला*	60.00
श्री श्री सिद्धिमाता प्रसंग	*राजबाला देवी*	20.00
श्री समर्थ रामदास	*ना०वि० सप्रे*	50.00
योगी कथामृत	*परमहंस योगानन्द*	70.00
Autobiography of Yogi	*Paramhansa Yoganand*	100.00
सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन	*नन्दलाल गुप्त*	140.00
Yogirajadhiraj Swami Vishuddhanand Paramhansdeva : Life & Philosophy	*N.L. Gupta*	400.00
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा	*म०म०पं० गोपीनाथ कविराज*	250.00
ज्ञानगंज	*पं० गोपीनाथ कविराज*	60.00
पुराण पुरुष योगिराज श्रीश्यामाचरण लाहिड़ी	*सत्यचरण लाहिड़ी*	120.00
Purana Purusha Yogiraj Sri Shayama Charan Lahiree	*Dr. Ashok Kr. Chatterjee*	400.00
योग एवं एक गृहस्थ योगी : योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी	*शिवनारायण लाल*	150.00
योगिराज तैलंग स्वामी	*विश्वनाथ मुखर्जी*	40.00
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन	*डॉ० अर्जुन तिवारी*	50.00
भारत की महान साधिकाएँ	*विश्वनाथ मुखर्जी*	40.00
भारत के महान योगी (भाग 1-6)	*विश्वनाथ मुखर्जी (प्रत्येक)*	100.00
महाराष्ट्र के संत-महात्मा	*ना०वि० सप्रे*	120.00
महाराष्ट्र के कर्मयोगी	*ना०वि० सप्रे*	80.00
शिवनारायणी सम्प्रदाय और उसका साहित्य	*डॉ० रामचन्द्र तिवारी*	100.00
महात्मा बनादास : जीवन और साहित्य	*डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह*	100.00
भुड़कुड़ा की सन्त परम्परा	*डॉ० इन्द्रदेव सिंह*	180.00
पूर्वांचल के संत महात्मा	*परागकुमार मोदी*	60.00
शिव काशी	*डॉ० प्रतिभा सिंह*	400.00
शिव की अनुग्रह मूर्तियाँ	*डॉ० शान्तिस्वरूप सिन्हा*	250.00
आसन एवं योग मुद्राएँ	*डॉ० रविन्द्रप्रताप सिंह*	250.00

म०म०पं० गोपीनाथ कविराज के अध्यात्मकपरक ग्रन्थ

भारतीय धर्म साधना	80.00
क्रम-साधना	60.00
अखण्ड महायोग	50.00
श्री साधना	50.00
श्रीकृष्ण प्रसंग	250.00
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा	130.00
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी	100.00
दीक्षा	80.00
सनातन-साधना की गुप्तधारा	120.00
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1, 2)	70.00
साधु दर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 3)	50.00
मनीषी की लोकयात्रा (म०म०पं० गोपीनाथ कविराज का जीवन दर्शन)	200.00
कविराज प्रतिभा	64.00
ज्ञानगंज	60.00
प्रज्ञान तथा क्रमपथ	80.00
तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग-तन्त्र साधना	50.00
परातंत्र साधना पथ	40.00
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 1)	200.00
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग 2)	120.00
अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान	40.00
काशी की सारस्वत साधना	35.00
भारतीय साधना की धारा	30.00
तांत्रिक साधना और सिद्धान्त	120.00

अध्यात्म, योग, तंत्र, दर्शन

धन धन मातु गङ्ग	*डॉ० भानुशंकर मेहता*	250.00
गङ्गा : पावन गङ्गा	*डॉ० शुकदेव सिंह*	25.00
कथा त्रिदेव की	*रामनगीना सिंह*	50.00
उत्तिष्ठ कौन्तेय	*डॉ० डेविड फ्रावली, अनु० केशवप्रसाद कायाँ*	150.00
साधना और सिद्धि	*डॉ० कपिलदेव द्विवेदी*	250.00
वाग्विभव	*प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	200.00
वाग्दोह	*प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	200.00
बृहत श्लोक संग्रह	*प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*	120.00
गुप्त भारत की खोज	*पाल ब्रंटन*	200.00
मारणपात्र	*अरुणकुमार शर्मा*	250.00
वह रहस्यमय कापालिक मठ	*''*	180.00
तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी	*''*	180.00
मृतात्माओं से सम्पर्क	*''*	200.00
तीसरा नेत्र (प्रथम खण्ड)	*''*	250.00
तीसरा नेत्र (द्वितीय खण्ड)	*''*	300.00
मरणोत्तर जीवन का रहस्य	*''*	300.00
परलोक विज्ञान	*''*	300.00
कुण्डलिनी शक्ति	*''*	250.00
हिन्दी ज्ञानेश्वरी	*(अनु.) ना०वि० सप्रे*	180.00
कृष्नायन	*रामबदन राय*	200.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन
चौक, वाराणसी

श्रीमद् एकनाथी भागवत

अनुवादक

ना०वि० सप्रे

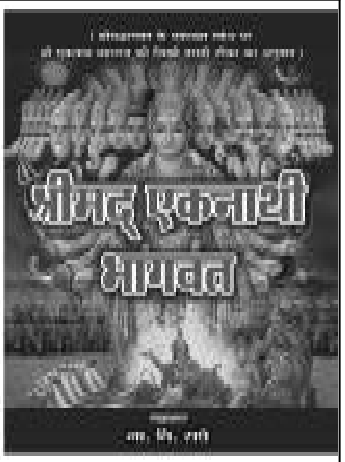

वेद में जो नहीं कहा गया गीता ने पूरा किया, गीता की कमी की आपूर्ति 'ज्ञानेश्वरी' ने की। उसी प्रकार ज्ञानेश्वरी की कमी को एकनाथी भागवत ने पूरा किया। दत्तात्रेय भगवान के आदेश से सन् 1573 में एकनाथ महाराज ने भागवत के ग्यारहवें स्कन्ध पर विस्तृत और प्रौढ़ टीका लिखी। यदि 'ज्ञानेश्वरी' श्रीमद्भागवत की भावार्थ टीका है तो नाथ भागवत श्रीमद्भागवत के ग्यारहवें स्कन्ध पर सर्वांगपूर्ण टीका है। इसकी रचना पैठण में शुरू हुई और समापन वाराणसी में हुआ। विद्वानों का मत है कि यदि ज्ञानेश्वरी को ठीक तरह से समझना है तो एकनाथी भागवत के अनेक पारायण करने चाहिये, तुकाराम महाराज ने भण्डारा पर्वत पर बैठकर एकनाथी भागवत का एक सहस्त्र पारायण किये।

पैठण में आरम्भ एकनाथी भागवत मुक्तिक्षेत्र वाराणसी में मणिकर्णिका महातट पर पंचमुद्रा नामक पीठ में कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा को पूर्ण हुई। इस ग्रन्थ में भागवत धर्म की परम्परा, स्वरूप विशेषताएँ, ध्येय, साधन आदि भागवत के आधार पर निरूपित हुआ है।

■ **संस्करण : 2004 (प्रथम)** ■ **ISBN :** 81-7124-402-5
❑ पृष्ठ : xvi + 852 ❑ मूल्य : रु० 600.00
■ **आकार : 25 सेमी × 18 सेमी० (डबल क्राउन अठपेजी)** ■ **प्रकार : सजिल्द**

पुस्तक परिचय

श्री सीताराम तिथि दर्पण (रामायणम्)

(प्रथम खण्ड)

प्रस्तोता : **दामोदर भाई 'लीला' दोसी**

23, गुरुकृपा, मोहन कॉलोनी, बाँसवाड़ा (राजस्थान)

प्रकाशक : प्रस्तोता स्वयं

मूल्य : 250.00

प्रस्तुत ग्रन्थ की विशेषता और अनूठापन है तुलसीकृत रामायण के अन्तर्गत प्रत्येक चरित का वर्ष, तिथि और वार सहित प्रामाणिक रूप से प्रस्तुतीकरण। यह अपने ढंग का अभिनव बौद्धिक अवदान है। रंगीन चित्रों से पुस्तक की शोभा नयनाभिराम है। ग्रन्थकार दामोदर भाई 'लीला' दोसी राजकीय सेवा में शिक्षक रहे हैं। बाद में फोटोग्राफी-व्यवसाय ग्रहण कर जापान और अमेरिका की यात्रा कर अपनी कला के लिए सम्मानित होते रहे हैं। ग्रन्थ दर्शनीय और पठनीय है। **—पानासि**

साहित्य-विवेक

लेखक : **डॉ० कुमार विमल**

प्रकाशक : बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

प्रेमचंद मार्ग, राजेन्द्रनगर, पटना-16

मूल्य : 115.00

प्रस्तुत पुस्तक के विवेच्य विषय हैं सौन्दर्यशास्त्रीय आलोचना के नये आयाम, भारतीय संस्कृति तथा हिन्दी साहित्य और नोबेल-पुरस्कार से सम्मानित मेक्सिको के कवि ओक्सावियी पाज के रचनात्मक लेखन के भारतीय सन्दर्भों में विचार-विश्लेषण। लेखक डॉ० कुमार विमल सौन्दर्यशास्त्रीय आलोचना के हिन्दी में प्रतिष्ठित विद्वान हैं। अब तक इनके तीस ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। इन्होंने भूमिका में साहित्य-विवेक की गम्भीर मीमांसा की है जो साहित्य-आलोचकों के लिए नया चिन्तन-विवेक देता है। लेकिन सौन्दर्यशास्त्र नाम से कोई शास्त्र नहीं है। शास्त्रों में वर्णित 64 कलाओं की चर्चा को सौन्दर्य-शास्त्र माना जाने लगा है। कला का अर्थ ही है सौन्दर्य का मूल्यांकन। काव्यगत सौन्दर्य का विवेचन मुख्य विवेचन बनता है। लेखक ने विदेशी लेखकों की चिन्तन-धारा को समेटते हुए अपने गम्भीर अध्ययन से जो विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत किया है वह आधुनिकतम यथार्थ का मूल्यांकन है। साहित्य-समीक्षकों को इससे नयी दृष्टि मिलेगी। **—पानासि**

अतीत का पुनरावलोकन

(एक मसिजीवी का आत्मकथ्य)

लेखक : **प्रो० भवानीलाल भारतीय**

प्रकाशक : दयानन्द अध्ययन संस्थान

8/423, नन्दनवन, जोधपुर-342 008

मूल्य : 300.00

लेखक ने भारतीय नवजागरण के ज्योतिर्धर स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन, व्यक्तिगत एवं विचारों का अध्ययन अनुशीलन किया तथा उनके विवेचन में दशकों पुस्तकें लिखीं। पुस्तक का आमुख कर्नाटक के राज्यपाल श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी ने लिखा है। उनके वक्तव्य से पुस्तक की महती उपयोगिता का संकेत मिल जाता है। उन्होंने कहा है कि डॉ० भारतीय का सम्पूर्ण जीवन आत्मविश्वास, लक्ष्य की स्पष्टता, परिश्रम, अध्यवसाय और निष्ठा का परिचायक है। उन्होंने अध्ययन और अध्यापन को अपना ध्येय बनाया। विद्यालयों से लेकर महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों से उनका सम्बन्ध रहा है। भारतीयजी के जीवन में महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के प्रति उनके लगाव ने प्रमुख भूमिका निभाई है। महर्षि का उदात्त चरित्र उनकी प्रेरणा का स्रोत रहा है। दयानन्द और आर्यसमाज के विषय में उन्होंने जो शोधकार्य किया है, वह अनुपम है।

ऐसे समर्पित जीवन के सौभाग्यशील मसिजीवी का आत्मकथ्य युवा और प्रौढ़ सभी को जीवन-यात्रा का मार्ग-दर्शन कराता है। पुस्तक न केवल पठनीय बल्कि संग्रहणीय है। **—पानासि**

दनकौर से लखनऊ तक

त्रिलोकचन्द्र गोयल

सेवानिवृत्त प्रोफेसर ऑफ सर्जरी

आरगो पब्लिशिंग हाउस, लखनऊ

यह लेखक की आत्मकथा है। जन्मस्थली दनकौर (बुलन्दशहर) से आरम्भ लखनऊ में मेडिकल की पढ़ाई, मेडिकल कालेज में सर्जरी के प्रोफेसर पद से 1991 में रिटायर होने तक जीवन के विविध प्रसंगों, व्यक्तियों के रोचक संस्मरण। एक वैविध्यपूर्ण जीवन की मनोरम गाथा।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 6 **फरवरी 2005** **अंक : 2**

प्रधान सम्पादक

पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक

परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क

रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी

द्वारा मुद्रित

E-mail : sales@vvpbooks.com

Website : **www.vvpbooks.com**

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Off.(0542)2421472,2413741,2413082,(Resi.)2436349,2436498,2311423 • Fax(0542)2413082